ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म्

नशा मुक्ति विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15 (मासिक)
₹ 150 (वार्षिक)

वर्ष : 28 | भाद्रपद-आश्विन | वि0स0 2073 | सितम्बर 2016 | अंक : 09

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन,

नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (ऋग्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)

आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी से आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी विक्रमी सम्वत् 2073 तक तद्नुसार बुधवार 5 अक्टूबर से रविवार 9 अक्टूबर 2016 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निदेशक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

यज्ञ के ब्रह्मा एवं प्रवचनकर्ता	:	आचार्य ज्येन्द्र जी, गुरूकुल नोएडा
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ के संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी
भजनोपदेशक	:	श्री कुलदीप जी
भजन, प्रवचन एवं अन्य कार्यक्रमों के संचालक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी एवं श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा

बुधवार 5 अक्टूबर से रविवार 9 अक्टूबर 2016 तक प्रतिदिन

योग साधना	:	प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	:	प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	:	सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	:	रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 5 अक्टूबर 2016 को प्रात: 9:00 बजे।
गायत्री यज्ञ	- बुधवार 5 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव	- गुरूवार 6 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- आचार्य डॉ. धनन्जय जी एवं आचार्य ज्येन्द्र जी
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 7 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी
शोभायात्रा	- शनिवार 8 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 8 अक्टूबर 2016 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- श्री कुलदीप जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
पूर्णाहुति एवं ऋषिलंगर	- रविवार 9 अक्टूबर 2016 को यज्ञ की पूर्णाहुति, भजन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर

नोट : 1. यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।
2. श्री लोकपाल जी योगाचार्य एवं एक्युप्रेशर चिकित्सक द्वारा डायबिटीज, मोतिया बिन्द एवं खर्राटों की नि:शुल्क चिकित्सा की जायेगी।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, सन्तोष रहेजा, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, विजय कुमार, योगराज अरोड़ा, रामभज मदान

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

ओ३म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–9

भाद्रपद–आश्विन 2073 विक्रमी सितम्बर 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,117 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य अभय देव	3
विनाश का मार्ग है मद्यपान	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
'मादक द्रव्यों का सेवन.......	मनमोहन कुमार आर्य	8
पथ–प्रदर्शक	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	12
शराब बन्दी पर प्रश्न तथा उनके उत्तर	यशपाल आर्य	15
शराब	काशीनाथ आर्य	22
गेहूँ के पौधे में रोगनाशक गुण	श्रीचिन्तामणिजी पाण्डेय	24
सच्चा आर्य समाजी अमीर ही रहता है	ओमप्रकाश अग्रवाल	27
कायाकल्प शिविर	डॉ० विनोद कुमार शर्मा योगाचार्य	29
योग शिविर	आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य	30
दान–दाताओं की सूची		31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000 / – प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000 / – प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000 / – प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

नशा मुक्ति

परमेश्वर ने अन्य जीवों को केवल भोग योनि प्रदान की है परन्तु मनुष्य को इन जीवों की अपेक्षा एक अतिरिक्त गुण अर्थात् योग योनि देते हुए कर्म करने की स्वतंत्रता प्रदान की है। यह जीवन हमें जीवन–मरण के चक्कर से छुटकारा पाकर मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करने के लिए मिला है। अन्य स्तनधारी जीवों का शरीर और सिर भूमि के समानान्तर रहता है, परन्तु मनुष्य का शरीर ऊर्ध्वाकार होता है और इसके सबसे ऊपर सिर रूपी सम्राट रहता है। इसका प्रयोजन यह है कि वह अपने मस्तिष्क को उज्ज्वल रखते हुए ज्ञान प्राप्त करे और इसी के बल पर कर्म करते हुए अपने जीवन को उच्च मार्ग पर प्रसस्त करे। मनुष्य को शरीर में अष्टचक्र और नवद्वार प्रदान किए गए हैं। इस शरीर में आत्मा रूपी अयोध्या नगरी है, जिसके आठ द्वार हैं। परमेश्वर ने सृष्टि के आदि में वेद का ज्ञान देते हुए इस पवित्र शरीर को पवित्र रखते हुए जीवन बिताने का मार्ग दिखाया है, परन्तु वह वेदादि शास्त्रों में दिए हुए सद्ज्ञान को जानने का प्रयास नहीं करता है और यदि जानता भी है तो उस पर विचार करते हुए जीवन नहीं बिताता है। मनुष्य को ईश्वर ने मन रूपी एक अद्भुत शक्ति प्रदान कर रखी है जिसके द्वारा वह चिन्तन करते हुए विचारों के सागर में गोते लगाते हुए अनेक कल्पनाओं का स्रजन कर सकता है। कुछ लोग इस मन को आराम देने या एक प्रकार का आनन्द या सुख पाने की लालसा से बुद्धि को लुम्पित करने के लिए नशे जैसे बाह्य साधनों का सहारा लेते हैं। नशे की आदत पहले पहल दूसरे लोगों को देख कर नकल करने की प्रवृत्ति से पड़ती है और बाद में यह दीर्घकालिक लत में बदल जाती है। ऐसे व्यक्ति जब कोई शुभ समाचार या कार्य होता है तो खुशी प्रकट करने के लिए और दुःख हो तो गम गलत करने के लिए नशे का सेवन करते हैं। आजकल तो अतिथि सत्कार में भी नशीले पेय आदि वस्तुओं को भेंट करने का प्रचलन दिनोंदिन बढ़ रहा है। कुछ ऐसे अतिथि होते हैं, जिन्हें मदिरा आदि पेय न मिलें तो वे मेजबान को कोसना प्रारम्भ कर देते हैं। नशे की लत से अनेक परिवार बरबाद होते हैं और बच्चों को भीख मांगने और कई महिलाओं को दूसरों के घरों में सेवाकार्य करने या वैश्यावृत्ति तक करने को विवश होना पड़ता है। अधिकांश सड़क दुर्घटनाएं मद्यपान करके वाहन चलाने से होती हैं, जिनमें न केवल इन नशेड़ियों अपितु हजारों निर्दोष लोगों की मृत्यु हो जाती है। आर्यसमाज ने सदैव समाज और देश का अहित करने वाले कार्यों का विरोध करते हुए लोगों के जीवन को सुधारने का बीड़ा उठाया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि नशा एक ऐसा अभिशाप है जिससे समाज को मुक्त कराना हम आर्यों का परम कर्त्तव्य है। हमें नशामुक्ति के लिए एक अभियान बनाकर कार्य करना होगा। इसके लिए एक रणनीति तैयार करनी होगी। जहां प्रान्तीय सरकारों को शराब बन्दी कराने के लिए राजी करना होगा, वहीं युवकों और भावी पीड़ी के बच्चों में नैतिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार करते हुए सच्चरित्र युवाओं का निर्माण करना होगा।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❁ वेदामृत ❁

स्वार्थ त्याग कर पवित्रान्तःकरण से नित्य आपकी वन्दना करें

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्।
नमो भरन्त एमसि।। –ऋ० १ । १ । ७; साम०पू० १ । १ । 4।।

ऋषिः–**मधुच्छन्दाः।** देवता–**अग्निः।।** छन्दः–**गायत्री।।**

विनय– जब से हम उत्पन्न हुए हैं, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिन आता–जाता है। प्रतिदिन एक नया–नया दिन और एक नयी–नयी रात आती–जाती है। इस प्रकार यह अनवरत, अविश्रान्त काल–चक्र चल रहा है। इस काल–चक्र में हम कहाँ जा रहे हैं? हे मेरे प्रभो! अग्निदेव! तुमने तो ये अहोरात्र इसलिए रचे हैं कि प्रत्येक अहोरात्र के साथ अपनी आत्मिक उन्नति का दायाँ और बायाँ पैर आगे बढ़ाते हुए हम प्रतिदिन तुम्हारे निकट पहुँचते जाएँ। यदि हम प्रत्येक अहोरात्र के आरम्भ में, अर्थात् प्रातःकाल और सांयकाल के समय में अपनी बुद्धि द्वारा तुम्हारे आगे झुकते हुए नमन करते हुए तथा कर्म द्वारा भी अपने "नमः" की भेंट तुम्हारे प्रति लाते हुए, तुम्हारे लिए स्वार्थ–त्याग करते हुए चलेंगे तो यह दिन–रात का चक्र हमें एक दिन तुम्हारे चरणों में पहुँचा देगा। इसलिए , हे अग्निरूप परमदेव! हम आज से निश्चय करते हैं कि हम प्रत्येक अहोरात्र को (प्रातःकाल और सायंकाल) अपनी बुद्धि तथा कर्म द्वारा तुम्हें नमस्कार की भेंट चढ़ाते हुए (आत्म–समर्पण व स्वार्थ–त्याग करते हुए) ही अब जीएँगे और इस तरह जहाँ प्रत्येक दिन के श्रममय काल में हमारा दायाँ पैर तुम्हारी ओर बढ़ेगा, वहाँ प्रत्येक रात्रिकाल में हमारी उन्नति का बायाँ पैर उस उन्नति को स्थिर करता जाएगा। हे प्रभो! ये दिन–रात इसीलिए प्रतिदिन आते हैं। निश्चय ही आज से प्रत्येक अहोरात्र हमें तुम्हारे समीप लाता जाएगा। आज से प्रतिदिन हम स्वार्थ–त्याग द्वारा पवित्रान्तःकरण होते हुए और पवित्रान्तःकरण से प्रातः–सायं तुम्हारी वन्दना करते हुए प्रतिदिन तुम्हारी ओर आने लगे हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते जा रहे हैं।

शब्दार्थ–अग्ने=हे अग्ने! **व्यम्**=हम **दिवे दिवे**=प्रतिदिन **दोषावस्तः**=रात और दिन के समय **धिया**=बुद्धि व कर्म से **नमः भरन्तः**=नमस्कार की भेंट लाते हुए **त्वा**=तेरे **उप**=समीप **एमसि**=आ रहे हैं।

विनाश का मार्ग है मद्यपान

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

सृष्टि के आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसके मार्ग निर्देशन के लिए वेदज्ञान दिया। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है–

सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुः तासामेकमिदभ्यं हुरो गात्।

आर्योर्हस्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरूणेशु तस्थौ।। (ऋग्0 10.5.6)

इस मंत्र का भावार्थ यह है कि परस्त्रीगमन, ब्रह्महत्या, गर्भपात, निन्दित कार्यों में बार–बार लगे रहना, मद्यपान करना, चोरी करना, और असत्यभाषण इन पापों को करने वाले दुष्टों का सहवास भी न करना सप्तमर्यादा कहलाती हैं। इनमें से एक भी मर्यादा का उल्लंघन करने वाला पापी कहलाता है। जो व्यक्ति धैर्य से हिंसादि इन समस्त पापों को छोड़ देता है, वह निःसन्देह रूप से जीवन में आत्मोन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ते हुए मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है।

शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य ने लिखा है– **''अनृतं पाप्मा तमः सुरा''** अर्थात् शराब असत्य, पाप और अन्धकार की जड़ है। आयुर्वेद के ग्रन्थ शांखधर संहिता में वर्णित किया गया है– **''बुद्धि लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते''** अर्थात् जो पदार्थ बुद्धि को विलुप्त कर देता है, उसे मदकारी कहते हैं। संस्कृत में मदिरा को 'मद्य' कहा जाता है क्योंकि इससे बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धि के नष्ट हो जाने पर आत्मा, चरित्र, सम्मान, धन, परिवार और समाज का भी विनाश होता है। जिस द्रव्य से मनुष्य की बुद्धि मन्द पड़ कर क्रियाविहीन हो जाती है और उसे नशे की हालत में ला देती है, वह मद्यपान कहलाता है। सुरा की परिभाषा मनुस्मृति में इस प्रकार दी गई हैः–

सुरा वै मलमन्नानां पाप्मा च मलमुच्यते।
तस्मात् ब्राह्मण–राजन्यौ वैश्यश्च न सुरां पिबेत्।।

अर्थात् अन्नों के मल को सुरा कहते हैं और मल को पाप कहा गया है। इस कारण सुरापान का अर्थ पाप को पीना है। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को शराब नहीं पीनी चाहिए। इस का अर्थ यह नहीं है कि शूद्र आदि को शराब पीने की अनुमति मिली हुई है। शास्त्रों में जो निषिद्ध कार्य हैं, वे सभी के लिए समान रूप से निषिद्ध हैं। मनुस्मृति में ही मद्य के बारे में कहा गया हैः–

चित्त भ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद् भ्रान्तं चित्तं पापचर्यामुपैति।
पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढास्तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयम्।।

अर्थात् मद्य पीने से चित्त भ्रान्त हो जाता है और चित्त के भ्रान्त होने पर मनुष्य पाप कर्म

सौजन्य से– RIKKI PLASTIC (PVT.) LTD.
(ISO/TS 16949:2002 Registered)
Plot No. B-5, Sector-59, Opp. JCB India Ltd., Ballabgarh, Faridabad, Haryana (INDIA)
Tele : 0129-4154941-42, Telefax : 0129-4154950

कर डालता है। पाप कर्म करके मूर्ख लोग दुर्गति को प्राप्त होते हैं। इसलिए मनुष्य को कभी मद्यपान नहीं करना चाहिए।

मनुस्मृति में में यह भी कहा गया है:– **''मद्यपे....नास्ति तत्त्वचिन्ता''** अर्थात् मद्यपान करने वाले को वास्तविक तत्त्व का ज्ञान नहीं हो सकता है।

और कहा है:– **''न पानेन सुरां जयेत्''** अर्थात् अधिक मद्य को पीकर कोई शराब के दुर्व्यसन को नहीं जीत सकता है, क्योंकि अधिक शराब पीने से वह व्यक्ति दुर्व्यसनों और रागों में फंसता चला जायेगा।

शराब के बारे में संस्कृत साहित्य में एक रोचक क्था मिलती है। आज तो शराब बोतलों में रखी जाती है परन्तु प्राचीन काल में यह घड़ों में रखी जाती थी। एक गणिका सिर पर घड़ा रखे जा रही थी। मार्ग में खड़े एक सिपाही ने उस गणिका से पूछा कि वह उस घड़े में क्या ले जा रही थी। गणिका ने पहले तो बताया कि इसमें उसका पेय पदार्थ है, परन्तु जब सिपाही ने उसे सही–सही पदार्थ बताने पर बल दिया तो उसने कहा:–

मदः प्रमादः कलहश्च निद्रा, बुद्धिक्षयो धर्मपिर्यश्च।
सुखस्य कन्था दुःखस्य पन्था, अष्टौ अनर्थाः वसन्तीह कर्के।।

अर्थात् वह इस सुरापात्र में आठ अनर्थ एक साथ लिए जा रही थी, वे थे– १. मद (नशा) २. प्रमादः (आलस्य) ३. कलह (लड़ाई–झगड़ा), ४. निद्रा (नींद), ५. बुद्धिक्षय (बुद्धि का नाश), ६. धर्मविपर्यय (अधर्म और अनर्थ का मूल), ७. सुखस्य कन्था (सुख का विनाश), ८. दुःखस्य पन्था (दुःखदायक मार्ग)। इस प्रकार मदिरा उपरोक्त इतने सारे दुःखों और अनर्थों को उत्पन्न करती है।

शराब की हानियों के सम्बन्ध में विभिन्न महापुरुषों के कथनः–

१. **रवीन्द्रनाथ टैगोर**– विश्वकवि टैगोर ने लिखा है कि ''जिस प्रकार किसी भी राष्ट्र व जाति तथा समाज को उन्नत बनाने के लिए उत्तम साहित्य संजीवनी बूटी है, उसी प्रकार किसी भी जाति को निस्सार और निस्तेज बनाना हो तो उस राष्ट्र व जाति में शराब की आदत डाल देनी चाहिए।''

२. **महात्मा गांधी**– आपने कहा है कि ''शराब सभी पापों की जननी है। वास्तव में शराब एक ऐसा पदार्थ है जो मनुष्य की चिन्तन शक्ति को नष्ट करता है।''

शराब से होने वाली हानियां–

१. **शराब मनुष्य को अपराधी बनाती है–** साहित्य में कहा गया है कि मनुष्य का चेहरा उसके मन व आत्मा का दर्पण होता है। शराबी के चेहरे को यदि हम ध्यान से देखते हैं तो वह घृणास्पद, निकृष्ट, असन्तुलित और खूंखार नजर आने लगता है। उसका शरीर और वाणी पर कोई नियंत्रण नहीं रहता है। वह समाज से तिरष्कृत हो जाता है। विवेक नष्ट हो जाने से उसे अच्छे–बुरे का कोई आभास नहीं रहता है ओर वह अनाप–शनाप बकने लगता है और लड़ाई–झगड़ा, मार–पीट आदि करता है। वह व्यभिचार, बलात्कार, चोरी, हेराफेरी, गबन आदि अपराधों में लिप्त हो जाता है। इस प्रकार अपराधी बनकर अपराध की दुनिया में प्रवेश कर जाता है।

२. **शराब पापों की जड़ है**– हम देखते हैं कि संसार में दिन–प्रतिदिन हत्या, अपहरण, बलात्कार, आदि क्रूरतम

अपराध बढ़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण लोगों के द्वारा शराब, स्मैक, हेरोइन, चरस, गांजा, अफीम आदि का सेवन करना है आजकल के नवजवान तो शराब के नशे से सन्तुष्ट नहीं होते हैं और जीवन की समस्याओं से भागने या आनन्द की प्राप्ति के लिए एक प्रकार का किक चाहते है, जो उन्हें नशीली ड्रग्स और इन्जैक्शन्स में मिलता है। इन नशीले इन्जैक्शन्स से उनका शरीर ही नष्ट नहीं होता अपितु एड्स जैसी भयानक बीमारी भी लग जाती है। हमारे देश के उत्तर–पूर्वी व अन्य कई राज्यों में यह रोग बढ़ता जा रहा है। शराब के नशे से मनुष्य पापी, दानव, पिशाच, शैतान और राक्षस बन जाता है।

३. **गृहस्थ को नष्ट करती है शराब**– शराब पीकर व्यक्ति बात–बात पर क्लेश करता है। वह पत्नी, माता–पिता और बच्चों की उपेक्षा ही नहीं करता अपितु उनके साथ गाली–गलौज और मार–पीट भी करने लगता है। बच्चे भी इस दुर्व्यवहार से मानसिक विकृतियों के शिकार हो जाते हैं। शराबी का नौकरी और व्यवसाय में मन नहीं लगता और कार्य न करने से उसकी नौकरी चली जाती है और व्यवसाय नष्ट हो जाते हैं। ऐसे में उसकी आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो जाती है कि न केवल उसकी गृहस्थी नष्ट होती है अपितु उसकी पत्नी और बच्चों को आत्महत्या करने तक के लिए विवश होना पड़ता है। कई बहनों को लोगों के घरेलू कार्य करके अपना जीवनयापन करना पड़ता है। कुछ बहनें अपना शरीर तक बेचने को विवश हो जाती हैं। इस दुर्व्यसन के ऐसे भयावह परिणाम हैं कि यह गृहस्थ जीवन को पूरी तरह से नष्ट कर देता है।

४. **समाज में सम्मान को नष्ट करती है शराब**– कई पियक्कड़ यह तर्क देते हैं कि वे सामाजिकता बनाये रखने के लिए पीते हैं। यह उनका भ्रम है। पंजाब प्रान्त पुलिस के एक महानिदेशक ने एक पार्टी में शराब पीकर एक वरिष्ठ आइ.ए.एस. अधिकारी महिला जिसका पति भी वरिष्ठ आइ.ए.एस. था और उसी पार्टी में उपस्थित था, शराब पीकर छेड़ा, जिसके फलस्वरूप न केवल उसकी देश में हर जगह घोर निन्दा हुई अपितु उसे न्यायालय द्वारा कई वर्षों का कारावास दिया गया, जिसकी सम्भवतः अपील लम्बित है। वह व्यक्ति अन्यथा अत्यंत प्रतिभाशाली था और पंजाब प्रान्त में उग्रवाद का सफाया करने में उसकी अग्रणीय भूमिका रही थी। उसे समाज में जो सम्मान मिलना चाहिए था, उससे तो वह वंचित रहा ही अपितु उसे घोर अपमान का सामना करना पड़ा। इसका मुख्य और एकमात्र कारण शराब है। इस प्रकार यह समाज में व्यक्ति के सम्मान को नष्ट कर देती है।

५. **दुर्घटनाओं का कारण है शराब**– मोटर व्हीकल अधिनियम के अन्तर्गत शराब पीकर वाहन चलाना वर्जित है परन्तु हम देखते हैं कि प्रायः लोग शराब पीकर वाहन चलाते हैं। ऐसी दशा में नियंत्रण की शक्ति न रहने के कारण गाड़ी किसी अन्य वाहन या खम्बे आदि से टकरा जाती है। कई बार पैदल यात्री उसकी चपेट में आकर घायल हो जाते हैं या मृत्यु के आलिंगन में पहुंच जाते हैं।

६. **शराब आत्मा और बुद्धि और शरीर का नाश कर मनुष्य को पशु बना देती है**— बुद्धि भ्रष्ट हो जाने के बाद मनुष्य दो पैरों वाला पशु बन जाता है क्योंकि बुद्धि ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। यदि यह बुद्धि ही लुप्त हो जाये तो वह एक क्रोधी, कामी, स्वार्थी, हिंसक पशु बन कर रह जाता है जिसमें न निर्णय करने की शक्ति होती ओर न ही भले—बुरे का विवेक होता है। शराब अधिक और रोजाना पीने से मनुष्य के गुर्दे ओर लीवर खराब हो जाते हैं। वह लीवर सीरोसिस आदि भयानक रोगों से पीड़ित होकर अन्ततोगत्त्वा मौत के आगोश में समा जाता है।

उपरोक्त समस्त तथ्यों पर विचार करने के उपरान्त हम यह पाते हैं कि मद्यपान करना मनुष्य के लिए विनाशकारी है। यदि जीवन में सुचिता और श्रेष्ठता रखनी है तो शराब जैसी विनाशकारी वस्तु से सदैव दूर रहना चाहिए। आर्यों का जीवन तो श्रेष्ठ होता है, परन्तु उन्हें अपने बच्चों, विशेषकर यदि वे हॉस्टल में पढ़ रहे हों या दोस्तों के साथ पार्टी या सैर—सपाटे में जा रहे हों तो उन पर नियंत्रण रखना चाहिए। हमारा यह दायित्त्व है कि समाज में व्याप्त इस दुर्व्यसन के विरुद्ध प्रचार कर, इसे समाप्त करें।

सचिव की कलम से

प्रिय पाठकगण,

पत्रिका के माध्यम से आपको आश्रम में चल रही गतिविधियों के बारे में अवगत कराने का प्रयास किया जाता है। इस समय आश्रम की कार्यकारिणी का ध्यान तपोवन आरोग्यधाम के अपूर्ण भवन को पूर्ण करने की ओर लगा हुआ है। मैंने आपको पिछले माह बताया था कि दिल्ली के एक दानी आर्य सज्जन ने लगभग आधा भवन पूर्ण करने का आश्वासन दिया है। आपको जानकारी देते हुए हर्ष हो रहा है कि आरोग्यधाम का निर्माण लगभग एक वर्ष के अन्तराल के बाद पुनः प्रारम्भ हो गया है। हमें आशा है कि अगले तीन—चार माह में हम इस स्थिति में होंगे कि चिकित्सालय में वाह्य रोगी सेवा प्रारम्भ की जा सके। शेष अपूर्ण भवन का निर्माण पूर्ण करने के लिए सभी दानदाताओं का आवाहन किया जाता है कि आप इस पुनीत कार्य में बढ़—चढ़कर योगदान करें ताकि यह चिकित्सालय अपनी पूरी क्षमता के साथ कार्य करना प्रारम्भ कर दे।

आप दानराशि आश्रम के बैंक खाता सं. 2162101001530, IFSC Code CNRB0002162 के अकाउंट ''वैदिक साधन आश्रम'' केनरा बैंक, क्लॉक टावर ब्रांच देहरादून में सीधे जमा करा सकते हैं। आश्रम को दिया गया दान आयकर की धारा 80—जी के अन्तर्गत कर मुक्त है। दान राशि जमा करने के उपरान्त कृपया आश्रम के दूरभाष नं. 0135—2787001 पर सूचित कर दें ताकि दान की रसीद आपके पते पर भेजी जा सके।

ओ३म्

'मादक द्रव्यों का सेवन व नशा व्यक्ति, देश व समाज का प्रबल शत्रु'

—मनमोहन कुमार आर्य

मनमोहन कुमार

आज बहुत से मनुष्य अनेक कारणों से नशीले वा मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक रोग है। सभी जानते हैं कि नशा मन, मस्तिष्क, बुद्धि, अन्तःकरण, शरीर व स्वास्थ्य को बिगाड़ता है। इससे किसी मनुष्य, स्त्री वा पुरुष को कोई लाभ नहीं होता, हानि सबकी निश्चित रुप से होती है। इसी कारण वेदों व हमारे पूर्वज ऋषि—मुनियों ने अपने विस्तृत वैदिक साहित्य में कहीं भी मादक द्रव्यों के सेवन का विधान व कथन नशा करने के लिए नहीं किया है। ऋषि दयानन्द वेदों व वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ हुए हैं। उनका वचन है कि मादक द्रव्यों वा नशा करने से मनुष्य की बुद्धि योग—विद्या जैसी सूक्ष्म व अन्य गहन विद्याओं को जानने व उसको अभ्यास द्वारा सिद्ध करने में असफल व अकृतकार्य रहती है। हमारी दृष्टि में नशे का सेवन मनुष्य जीवन का हानिकारक कार्य, व्यवहार अथवा आदत है जिसका सेवन करने वाला मनुष्य समाज में अपमानित होता है, उसके शारीरिक बल वा श्रम की सामर्थ्य कम होती है और वह कुछ समय बाद अनेक रोगों से ग्रसित होकर दुःखी व सन्तप्त रहते हुए संसार छोड़ कर चला जाता है। कर्मफल के सिद्धान्त से भी इस घटना का विश्लेषण करना उचित है। विश्लेषण करने पर यह पाया जाता है कि नशा करने से मनुष्य को इस जन्म में तो आर्थिक हानि, सामाजिक अपमान, अल्पायु व शारीरिक रोगों से त्रस्त होना ही पड़ता है अपितु इसका कुपरिणाम उसे ईश्वर की व्यवस्था से भावी जन्म—जन्मान्तरों में भी भोगना पड़ता है। शराब व मादक द्रव्यों के सेवन का कुपरिणाम यह भी देखा गया है कि नशे का सेवन करने वाला व्यक्ति अपनी पत्नी, माता—पिता व बच्चों का भली प्रकार से पालन पोषण नहीं कर पाता। उसके मेधावी बच्चे साधनों के अभाव में सुशिक्षित न होकर अपने ही कम प्रतिभावान साथियों से पिछड़ जाते हैं जिसका परिणाम बच्चे व परिवारजन तो भोगते ही हैं, सारा देश व समाज भी भोगता है क्योंकि यही बच्चे भविष्य के देश के सैनिक, सचिव डाक्टर—इंजीनियर—व्यापारी—अध्यापक—नेता—वैज्ञानिक आदि हो सकते थे। इसके लिए न केवल हमारा धार्मिक व सामाजिक वातावरण

ही दोषी है, बल्कि इसके लिए हमारी सरकारें भी उत्तरदायी हैं जो राजस्व के उलट–फेर में इसको प्रोत्साहित करती हैं। हमें यह भी लगता है कि सृष्टि के आदिकाल से महाभारतकाल तक के वैदिक राज्य में कभी भी इस प्रकार के नशीले पदार्थों का सेवन करने की अनुमति व व्यवस्था नहीं थी। महाभारत काल के बाद अव्यवस्था होने पर ही सभी बुराईयों का सूत्रपात हुआ जिसमें से एक नशा करने की प्रवृत्ति व सेवन भी हो सकता है परन्तु इसका विस्तार देश में विधर्मियों के आक्रमण व उनकी सत्ता स्थापित होने पर अधिक हुआ।

नशे की आदत मनुष्यों को अपराधी प्रकृति व प्रवृत्ति का बनाती है। नशा करने वाले व्यक्ति को नशीले पदार्थ खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। उसे अपनी अन्य सुख–सुविधाओं के लिए भी धन चाहिये होता है, उसके पास धन होता नहीं है, अतः उसे अपराधों में प्रवृत्त होने के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग दिखाई नही देता। वह नशीले पदार्थ एवं अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए परिस्थितियोवश नाना प्रकार के अपराध करता है जिसमें चोरी, अपहरण, बलात्कार सहित नशे के प्रभाव से चरित्र हनन के कार्य, हत्यायें, भ्रष्टाचार, बलात्कार व अन्य अनेक अपराध सम्मिलित हैं। इसका प्रभाव उस व्यक्ति के जीवन पर तो पड़ता ही है, इसके साथ उसका परिवार भी सारा जीवन उसके इस बुरे काम का फल भोगता है। यदि नशा करने वाले दोषियों में शामिल व्यक्तियों पर विचार करें तो शराब व मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला व्यक्ति तो दोषी है ही, वह लोग जो इस नशे करने व कराने के कार्य में किसी न किसी रूप में सम्मिलित हैं, वह सभी दोषी होते हैं। हमारी व्यवस्था में शराबी व्यक्ति को ही दोषी माना जाता है उसके सहयोगी अन्य व्यक्तियों को नहीं। ईश्वर व प्राकृतिक न्याय के अनुसार किसी व्यक्ति को गलत कार्य में प्रवृत्त कराने वाला भी अपराधी ही होता है। हमारे देश में नशीले पदार्थों के सेवन का व्यवहार मुख्यतः विदेशी विधर्मी हमलावरों व शासकों के द्वारा आया। वह इसका सेवन करते थे और उन्हीं के द्वारा इसे देश की जनता में प्रवृत्त किया गया। **हमारा देश राम, कृष्ण, हनुमान, भीष्म, युधिष्ठिर, विदुर, भीम, अर्जुन, चाणक्य, स्वामी शंकराचार्य व महर्षि दयानन्द आदि का देश रहा है जिसमें कोई भी व्यक्ति नशे के सेवन करने वाला नही होता था।** महाभारतकाल से पूर्व के प्रायः सभी लोग ईश्वरोपासक होते थे और बाद के भी सभी धार्मिक लोग नशे को पाप जानकर इसका सेवन नहीं करते थे, आज भी नहीं करते। ईश्वरोपासना का वैदिक स्वरूप योग पद्धति है। योग पद्धति में पांच यम और पांच नियमों का पालन करना पड़ता है। नियमों में एक नियम शौच भी है। शौच का अर्थ न केवल शरीर की बाह्य शुद्धि है अपितु आन्तरिक शुद्धि के लिए शुद्ध आहार व भोजन, गोदुग्धादि तथा फलों के सेवन सहित पवित्र विचारों व चिन्तन–मनन से मन को पूर्णतः शुद्ध व पवित्र रखा जाता है जिसमें मांस, मदिरा, शराब, नशे वा मादक द्रव्यों का सेवन निषेध है। अतः वैदिक काल में वैदिक राजा तथा प्रजा का कोई भी नागरिक मादक द्रव्यों का सेवन कदापि नहीं करता था।

हमारे देश में शराब का सेवन करने वाले लोग अधिकांशतः वह है जो निम्न वर्गीय होते हैं अर्थात् जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती। यह स्वभाविक है कि ऐसे परिवार अधिक शिक्षित नहीं होंगे क्योंकि आजकल शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है जिसे अब मध्यम व उच्च वर्गों के परिवार ही प्राप्त कर सकते हैं। अतः हमारे निम्नवर्गीय भाई बचपन से ही कुसंगति से ग्रस्त होकर अज्ञानतावश शराब वा नशे का सेवन करने लगते हैं। इससे इनका परिवार रसातल में चला जाता है और सरकार का राजस्व और शराब माफियाओं को

लाभ होता है। शराब माफिया यद्यपि देश में उत्पन्न हुए शिक्षित व उच्च आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति होते हैं परन्तु ज्ञान की कमी के कारण यह लोग जान ही नहीं पाते कि यह कार्य देश हित का नहीं अपितु देश का अहित करने वाला है। शराब का सेवन न करने देना वा छुड़ाने का अधिक दायित्व तो सरकार का है परन्तु दुर्भाग्य व अज्ञानता के कारण राजस्व की वृद्धि के लिए सरकारें शराब की बिक्री कराती हैं। शराब से प्राप्त होने वाला राजस्व बहुत निकृष्ट श्रेणी का होता है। इससे देश का भला होने की सम्भावना नहीं की जा सकती। इसका कारण है कि इसमें करोड़ों गरीब देशवासियों के परिवारों, माताओं, शराबियों की पत्नियों व बच्चों की आहें जुड़ी होती हैं। हमें विश्वास है कि यदि एक वैदिक विचारों का व्यक्ति राजसत्ता पर आसीन हो तो वह राजस्व के लिए शराब जैसे स्वास्थ्य व चरित्र की हानि करने वाले मादक पदार्थों की बिक्री की अनुमति नहीं दे सकता। यह सब विदेशी शिक्षा–दीक्षा के संस्कार व उसके प्रभाव हैं जो मनुष्य की बुद्धि व आत्मा को विवेक, सत्य व यथार्थ स्थिति से दूर कर प्रलोभनयुक्त हानिकारिक चिन्तन में प्रवृत्त करती है।

हम आर्यसमाज पर दृष्टि डालते हैं तो यह विश्व का एकमात्र ऐसा धार्मिक व सामाजिक संगठन है जिसके लगभग 95 प्रतिशत से अधिक लोग शराब व किसी भी प्रकार के नशे का सेवन नहीं करते। इसका कारण वैदिक धर्म के सिद्धान्त व ऋषि दयानन्द के धार्मिक, सामाजिक, व्यक्तित्व विकास संबंधी विचार व वेदों का कर्म–फल सिद्धान्त है। नशीले पदार्थों का उत्पादन व बिक्री सिद्धान्ततः अनुचित व देश तथा समाज के लिए हानिकारक व्यवस्था है जो कि तर्क व प्रमाणों के आधार पर सिद्ध है। शायद् इसी कारण सरकारों द्वारा शराब की बिक्री की छूट देने पर भी सरकार द्वारा ही नशे के विरुद्ध प्रचार कराया जाता है। सरकार द्वारा शराब के सेवन के विरोध में नियम बनाये जाते हैं, वाहन चलाते हुए नशा करना निषिद्ध है जिससे दुर्घटनायें न हो और नशे से होने वाले कुप्रभावों की चेतावनियां भी दी जाती है। अपराधों में संलिप्त अधिकांशतः सभी अपराधी नशे का सेवन करने वाले होते हैं। **यहां देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई का उल्लेख भी प्रासंगिक है जिन्होंने बिना किसी की मांग व आन्दोलन के स्वात्मप्रेरणा से अपनी जनतापार्टी की सरकार के द्वारा सम्पूर्ण देश में नशाबन्दी लागू की थी।**

नशे के कारोबार से जुड़े और व्यवस्था में लगे इस कार्य से अनुचित लाभ प्राप्त करने वाले सरकार के लोगों ने शराबबन्दी को सफल नहीं होने दिया था। यदि उसमें सभी का सहयोग मिलता तो देश को बहुत लाभ होता। आज यह उदाहरण एक इतिहास बन कर रह गया है। हम समझते हैं कि जिस प्रकार की शिक्षा व मानसिकता वाले नेताओं के हाथों में सत्ता रहती आ रही है वह लोग शायद कभी शराबबन्दी स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि आजकल वोट प्राप्ति में भी शराब की अहम् भूमिका रहती है। **अतः नशाबन्दी वा नशामुक्ति का एकमात्र उपाय जन–जन में नशे के विरोध में प्रचार करना है।** वर्तमान के हिन्दुओं के सभी धर्म–गुरुओं वा कथावाचकों को अपनी कथा व अन्य कार्यक्रमों में शराब से होने वाली हानियों पर भी बोलना चाहिये और यह स्पष्ट करना चाहिये कि शराब का सेवन करने वाला व्यक्ति धार्मिक नहीं हो सकता और वह इस कुकृत्य के लिए ईश्वर की न्यायव्यवस्था से दण्डित होगा जिससे उसका यह जन्म तो प्रत्यक्ष बिगड़ता ही है उनका परजन्म भी निश्चित रूप से बिगड़ेगा। **सौभाग्य से स्वामी रामदेव भी शराब का स्पष्ट शब्दों**

में अपने प्रसारणों व उद्‌बोधनों में विरोध करते हैं। इसका देश की जनता पर अनुकूल प्रभाव भी पड़ रहा है। वर्तमान में शराब व मादक द्रव्यों के विरुद्ध सबसे अधिक प्रभावशाली कार्य कोई कर रहा है तो वह केवल स्वामी रामदेव ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सभी माता–पिताओं को भी चाहिये कि वह अपनी सन्तानों को कुसंगति से दूर रखें और बचपन से ही शराब के प्रति उनके मन में घृणा उत्पन्न कर दें और इसके साथ उन्हें सच्चरित्रता के उदाहरण भी सुनाये जिससे भावी जीवन में वह शराब व नशे के सेवन से बच सकें। ऐसा होने पर ही देश, जाति व समाज का कुछ सुधार हो सकता है।

शराब व नशे पर चिन्तन करते हुए हम एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं जहां कोई नशा न करता हो। इसके लिए जागृति की आवश्यकता है। जहां नशा न करने वाले विवेकशील व्यक्ति होंगे वहां मांसाहार व अन्य अभक्ष्य पदार्थों का सेवन भी नहीं होगा। ऐसा समाज सभी बुराईयों व अपराधों से मुक्त होगा, इसका अनुमान होता है। ऐसे समाज में सभी स्वस्थ होंगे, रोगियों की संख्या बहुत कम होगी, विवेकशील लोगों का धर्म भी अन्य कोई नहीं अपितु वैदिक धर्म ही होगा। सभी गोपालन करेंगे व गोदुग्ध व इससे बने घृत, दही, मक्खन आदि का सेवन कर सुदृढ़ व बलवान निरोगी शरीर वाले होंगे। ऐसे लोगों की बुद्धि भी तीक्ष्ण व ज्ञान को ग्रहण करने में प्रबल होगी। ऐसा समाज ही विश्व का ज्ञान, विज्ञान व सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्यों से सम्पन्न आदर्श समाज हो सकता है। दुःख है कि ऐसा समाज संसार में कहीं नहीं है। यदि कहीं बन जाये, तो हमारा अनुमान है कि सारा संसार उसका अनुकरण करेगा। वर्तमान आधुनिक समय में भारत व सभी देशों में ऐसे समाजों की आवश्यकता है। ऐसे समाज को ही हम श्रेष्ठ मानव–आर्य समाज व आर्य राष्ट्र कह सकेंगे। सारे देश में शराब के दुष्प्रभावों का प्रभावशाली प्रचार हो, सभी लोग शराब से घृणा करें, एक भी व्यक्ति शराब का सेवन न करे, सरकारें इसके लिए मनसा–वाचा–कर्मणा कार्य करें, राजनीति बिलकुल न हो, ऐसा होने पर ही आदर्श व देश का निर्माण होगा। आज ऋषि दयानन्द के समान वेद को ईश्वरीय ज्ञान मान कर शराब व नशा मुक्त भारत का निर्माण करने वाले एक नहीं अपितु सहस्रों शराब विरोधी युवा समर्पित देशभक्तों की आवश्यकता है जिनका मिशन ही शराब व नशीले पदार्थों को देश से समाप्त करना होना चाहिये। **हमें यह भी लगता है कि यदि विश्व वैदिक धर्मी आर्य विचारों का बन जाये तो सारे विश्व में शराब, नशा, मादक द्रव्यों का सेवन और सभी बुराईयां समाप्त हो सकती हैं।**

उपरोक्त विचारों को कार्य रूप देने के लिए स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने सभी आर्य समाजों का आवाहन किया है कि वह 9 अगस्त 2016 को नशा–मुक्ति दिवस के रूप में मनायें तथा प्रदेश के मुख्यमंत्रियों को ज्ञापन देकर नशाबन्दी लागू करने का अनुरोध करें। आर्य समाज का यह कार्य अत्यधिक प्रशंसनीय व प्रेरणादायक है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड ने नशा–मुक्ति आन्दोलन को गति देने तथा 26 नवम्बर 2016 को देहरादून में एक बड़ा सार्वजनिक सम्मेलन करके जनसाधारण को मादक पदार्थों का प्रयोग बन्द करने के लिए प्रेरणा देने का निर्णय लिया है। लेखक का अनुरोध है कि पाठकगण अपने प्रदेश में भी नशा–मुक्ति लागू कराने के लिए इसी प्रकार का कार्यक्रम प्रारम्भ करें।

।। ओ३म् ।।

पथ–प्रदर्शक

लेखक :– महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक पथ–प्रदर्शक से साभार

1–प्रार्थना

ओं वेनस्तत्पश्यत् परमं गुहा तद्यत्र विश्वं भवत्येकरूपम्

अथर्ववेद, काण्ड 2, सूक्त 1 ।।

प्रभो! तुझे किस तरह गाऊं, तू तो दिखता ही नहीं। यह सारा जगत तेरा ही विस्तार है, जो जगत् का थोड़ा सा अंश–मात्र दिखाई भी देता है, तो उसमें भी तू कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता।

तू है तो अवश्य, परन्तु छिपा हुआ है। इच्छा हुई कि तुझे छिपकर ही देखूं, जिससे तू मुझे दिखाई दे सके। शायद योगीजन इसीलिए पहाड़ों की कन्दराओं और गुफाओं में जाकर तुझे ढूंढते हैं। परन्तु तू वहां भी नहीं मिला। कन्दराओं में तो पत्थर ही पत्थर दिखते हैं। वहां भी तेरा दर्शन नहीं होता।

मुनि जंगलों में तेरा ध्यान लगाते हैं। परन्तु वहाँ भी तू दर्शन नहीं देता। वहाँ केवल वृक्ष ही वृक्ष है। यदि मैदान में तेरी खोज करता हूं, तो वहाँ खुला स्थान है, तू छिप नहीं सकता।

अच्छा! समुद्र में गोता लगाकर तुझे देखें तो क्या तू दिखेगा? नहीं! नहीं!! वहाँ तो बड़े–बड़े मगरमच्छ और अन्य जल–जन्तु ही हैं। वहां तू कहाँ?...

फिर हे प्रभो! अब तू ही बता? कहां? किस कोठे में? किस कुटिया में द्वार बन्द करके मैं तुझे देख सकता हूँ?

नहीं–नहीं जब मैं तुझसे पूछता हूँ, तो 'नकार' (नहीं) ही मैं उत्तर मिलता है।

हे जगदीश! तो क्या तू किसी से मिलना ही पसन्द नहीं करता? तेरे पीछे लाखों मनुष्य मारे–मारे फिरते हैं। परन्तु तुझे तनिक भी तरस नहीं आता। प्रभो! तेरा स्वभाव ही अनोखा है। तुझे किसी का डर तो नहीं, जो तू प्रकट नहीं होता? तू तो सर्वशक्तिमान है। जग रचियता, अजर, अमर और अभय है।

फिर...फिर क्या ऐसे ही रुलाता रहेगा? प्रभो, कभी मान भी लिया कर। मैं तुझसे धन नहीं मांगता जो तुझे देना पड़ेगा। राज नहीं मांगता कि तुझे किसी से लड़ाई करनी पड़ेगी। स्त्री नहीं मांगता कि किसी को प्रेरित करना पड़ेगा। शरीर नहीं मांगता जो तुझे स्वयं बनाना पड़ेगा। मैं तो मांगता हूँ तेरा दर्शन...। इसमें तेरा क्या बिगाड़ है? तुझे किसी दूसरे से कहना तो नहीं पड़ता। तेरा कुछ मोल भी नहीं लगता, कुछ बिगड़ता भी नहीं। पर मेरा सब कुछ सुधर जाता है।

बस! बस! प्रभो! आओ! आओ! बहुत हो चुकी है। मेरे साथ बहुत हो चुकी... अब कुछ तरस खाओ! दया करो। कृपा निधे! कृपा करो! सारी आयु रूठे न रहो। कभी तो मान भी जाओ। बड़ा उपकार होगा। मुझ निमाने के मान बनो। मुझ निराश्रय के आश्रय बनो। मुझ निताने की तान तुम ही हो। मुझ अटेक की टेक तुम ही हो।

प्रभु मैं नियोटा हूं।

मुझे एक तेरी ही ओट है।

प्रभो! अब कृपा करो!

आहा! आहा! प्रभु तेरी कृपा हुई! अतिशय कृपा हुई। मैं सुन रहा हूँ... दिल से सुन रहा हूं तू अपना रास्ता बता रहा है.... तू... मिलेगा। मेरे हृदय की गुफा में ही मिलेगा? अच्छा.... अच्छा... ठीक है। यह तो बड़ा सुगम काम है बाहर भी टक्कर न मारनी पड़ी। घर में ही काम बन गया।

हाँ प्रभो! फिर कैसे आऊं? आप कहते हैं... गुफा के रास्ते। वहां तो घुप अन्धेरा है। वहां कोई पहुंच नहीं सकता। गुफा में बड़ा घोर तिमिर है परन्तु मार्ग तंग है। मन्जिल दूर है। श्रद्धा का दीपक बना लो। उसमें प्रेम की बत्ती रखो और अभ्यास करो, तेल डाल लो, ज्ञान की ज्योति से इस दीपक को जला लो, उजाला हो जायेगा।

अच्छा? फिर इस दीपक के उजाले में इस घोर अन्धकारमय मार्ग को जल्दी से पार कर लेंगें। हां क्या कहा! जब प्रकाश नजर आने लगेगा तो यह दीपक अपने हाथ से छूट जावेगा।

वाह? प्रभो...वाह! मार्ग तो बड़ा कठिन था परन्तु ढंग बहुत ही सरल बनाया। यह तो बड़ा सरल काम है। बड़ी कृपा हुई। तीन चीजें तो मेरे पास हैं ही। श्रद्धा, प्रेम और अभ्यास। अब केवल ज्ञान की कमी है। भगवन्! वह ज्ञान कहां से लाऊं? दीनानाथ! अब थोड़ी सी वस्तु के लिए अड़चन न लगाओ यह भी आप ही दे दो या बता दो। यदि कहीं से मोल मिलती हो तो खरीद ही लूं। नहीं, नहीं यह तो खरीदने की वस्तु नहीं, खरीदने से कब मिलेगा?

प्रभो! फिर वही 'नहीं—नहीं' आ गई। न जाने आपको क्या हो गया? आप तो बड़े दयालू हैं, फिर यह अड़चन कैसी? प्रभो! सच बताईये यह ज्ञान यदि न भी हो तो क्या इन तीन चीजों से किसी को आपका दर्शन नहीं मिला। यदि पहले किसी को नहीं मिला तो मुझ पर दया करो। मुझे ज्ञान को तलाश में उत्तेजित न करो और कृपा करके दर्शन दे दो। ज्ञान फिर ढुंढवा लेना।

क्या मेरी यह विनती भी न मानोगे? क्या मेरा इतना भी अधिकार नहीं, मैं असंख्य वर्षों से भटकता फिरता हूँ। कहीं मुझ को खाना नहीं मिलता। कहीं शीत से ठिठुरता हूं कपड़ा तक नहीं जुड़ता। कहीं रोने से मुझे बेहाल कर रखा है। प्रभो! मेरी मान—मर्यादा कुछ न सही तुम्हारी तो सब कुछ है। कहते हैं जो तुम्हारी शरण में जाता है, वह तुम्हारा प्रकाश पाता है, प्रभो! भिक्षा दो... जरूर दो... भिखारी को अपने द्वार से न लौआओ।

प्रभो! तुम दानियों के दाता हो। अच्छा! बड़ी कृपा की! क्या कहा? ''ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं और ज्ञान मिलेगा गुरु से'' प्रभो! तुमसे अच्छा गुरु कहां मिलेगा? मेरा जन्म व्यर्थ न बिगाड़ो। यदि इस जन्म में पूरा गुरु न मिला तो संसार नीचों और पाखण्डियों से भरा पड़ा है। पूरे गुरु की मुझे पहचान नहीं। कहीं किसी के कपट जाल में न फंस जाऊं। तुम्हीं पूरे, परिपूर्ण और सच्चे गुरु हो, नेता और पथ—प्रदर्शक हो, तुम ही कृपा करो। कुछ लेना हो तो इसी के बदले ले लो। मैं सब कुछ देने को तैयार हूं। यह घड़ी मुझे फिर कब हाथ आवेगी? बड़ी कठिनता से तो तुम इतनी कृपा करने लगे हो। कहो—क्या यह ज्ञान—दान दोगे?

क्या कहा? मैं क्या दूंगा? प्रभो! मैं क्या दूंगा? रुपये मेरे पास नहीं। रोटी घर में है। कपड़े बाजार में है। मैं तो तेरे द्वार पर खाली हाथ खड़ा हूँ कोई ऐसी चीज न मांगना, प्रभो! जो मुझे आप

की शरण त्याग कर कहीं और से लानी पड़े और फिर मैं यह अवसर ढूंढता ही रहूं।

क्या कहा! 'तेरा शरीर नहीं चाहता, तेरा धन तथा वस्त्र नहीं चाहता। यह तो मैंने ही तुझे दिए हैं। तू केवल अपनी 'मैं' ही मुझे दे दो, तो तुझे ज्ञान प्राप्त हो जायेगा और तेरी ज्ञान ज्योति जग जायेगी।''

वाह रे प्रभो! वाह! खूब कही 'मैं' तो दे दूं तुझे और मैं बन जाऊं कोरा ठनठन–गोपाल। फिर संसार के कार्य कैसे करूं? बाल बच्चों को कैसे पालूं? जीवन निर्वाह कैसे करूं? तेरी प्रार्थना कैसे करूं? वाह! वाह! प्रभो! तू तो कोई बड़ा कनफुकुआ गुरु है। तेरा मनोभाव मैं समझ गया, कि न यह 'मैं' अर्पण करेगा और न मैं दर्शन ही दूंगा। तू तो सारे संसार को ऐसे ही भटकाता है। पर अब मैं भी तेरे पीछे पड़ा हूं देखूं तू दर्शन देता है कि नहीं? तंग आकर आप ही दर्शन देगा।

भला मैं अपनी 'मैं' तुझ को दे दूं तो– तू' तेरी तू– कहां उपायेगी? मैं हो गया तू... तो भी मैं ही हो जायेगा! वाह! वाह!! वाह!!! अब मैं समझ गया, अहा!

मैं तू हुआ तू मैं हुआ,
और अन्य कोई न रहा।

कैसे कहे कोई भला।
मैं और हूं तू और है।

मैं तन तो तू है आत्मा,
मैं आत्मा तू परमात्मा,

मैं तुझमें रमा तू मुझ में रमा,
फिर भेद मुझ में तुझ में क्या।

कैसे कहे कोई भला।
मैं और हूँ तू और है।

मैं फूल हूं और बू है तू,
कोयल हूं मैं, कू–कू है तू,

मैं क्या नहीं, क्या कुछ है तू,
मैं कुछ नहीं, सब कुछ है तू,

कैसे कोई जाने भला।
मैं और हूं तू और है।

प्रभो तेरा भला हो? भला हो! मार्ग तूने सुगम ही बता दिया। अब आगे मेरा भाग्य

टेकचन्द
(प्रभु आश्रित)

पुरोहितों की आवश्यकता

देहरादून जनपद की निम्न आर्य समाजों के लिए व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। निःशुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

आर्य समाज का नाम	**सम्पर्क सूत्र एवं मोबाईल नम्बर**
वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, 9412051586
आर्य समाज लक्ष्मण चौक, देहरादून	श्री के.पी. सिंह, 07500776600
आर्य समाज मसूरी	श्री नरेन्द्र साहनी, 9837056165
आर्य समाज चकराता	श्री एस.एस. वर्मा, 9410950159
आर्य समाज धर्मपुर	श्री शत्रुघ्न कुमार मौर्या, 9412938663

शराब बन्दी पर उठने वाले प्रश्न तथा उनके उत्तर

—यशपाल आर्य

यह लेख स्वर्गीय श्री यशपाल आर्य पूर्व प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड द्वारा उत्तराखण्ड राज्य के गठन के बाद लिखा गया था। इस लेख में विद्वान लेखक द्वारा शराबबन्दी लागू करने के उपरांत सम्भावित अनेक शंकाओं का तर्कपूर्ण समाधान प्रस्तुत किया गया है।

—सम्पादक

शराब बन्दी की चर्चा होने पर उठाए जाने वाले प्रश्नों का तर्क—संगत उत्तर प्रस्तुत है—

प्रश्न— शराब पर प्रतिबन्ध लगाने से आबकारी टैक्स के रूप में प्राप्त होने वाली 200 करोड़ रुपये की आमदनी सरकार की घट जाएगी। बिना धन सरकारी खर्चा कैसे चलेगा?

(क) निवेदन है कि वास्तव में शराब से सरकार को कोई आमदनी नहीं होती है। शराब से आय होना मानना, एक वहम है या जनता को भ्रमित करना है जो निम्न उदाहरणों से स्पष्ट है।

एक व्यक्ति ने बकरे का एक मेमना 500 रु० का खरीद लिया और दो साल बाद 1300 रु० का बेच दिया। सायंकाल पत्नी से कहने लगा—भागवान! बकरा 1300 रु० में बेच दिया है। 800 रु० का नफा हुआ है, सो आधा नफा 400 रु० मुझे दे दो। पत्नी बोली हिसाब कर लो—नफा आधा—आधा बांट लेंगे।

इसमें हिसाब है क्या? सीधा 800 रु० का नफा है। देखो जी घर में बकरी बांधने की जगह नहीं थी। बकरी मुल्ला जी के आंगन में बांधी गई। पाँच रुपया महीना किराया दो साल का, 120 रु० तो ये हो गया। हाँ ठीक है और भी तो सुनो। मैं नित्य प्रति प्रातः और सांय पत्ते लाने जाती रही। कम से कम एक घण्टा सवेरे और एक घण्टा शाम का लगा। तब बकरी पली। तुम तो दिन भर की आठ घण्टे की दिहाड़ी करते हो 80 रु० रुपये लाते हो। दस रुपया घण्टा। क्या मुझे एक रुपया प्रति घण्टा भी मजदूरी नहीं मिलनी चाहिए? एक रुपया प्रतिदिन का ले लें। चल एक रुपया ही सही। दो साल के 720 रु० हो गये। 120 रु० मुल्ला जी वाले जोड़कर खर्चा 840 रु० आमदनी 800 रु० की। 40 रु० घाटा है। तु नफा बता रहा है। शराब से आमदनी मानने वालों का हिसाब भी उसी प्रकार का है जैसे बकरे का 800 रु० नफा बताने का हिसाब। जब सरकार एक करोड़ रुपया आबकारी का टैक्स वसूल करती है तो उस रकम को उगाहने में सरकार को 32 लाख 80 हजार खर्च करना पड़ता है। यानी वास्तव में केवल 67 लाख 20 हजार रुपया ही सरकार के पल्ले पड़ता है और वह भी तब, जब जनता अपने गाढ़े पसीने की कमाई का दो करोड़ चौरासी लाख रुपया शराब में फूँक देती है। जनता के दो करोड़ चौरासी लाख रुपये को नष्ट करके 67 लाख रुपये की कमाई करना कहाँ का नफा है? कौन सा अर्थशास्त्र है?

(ख) संसार में दुर्घटनाओं में प्रति वर्ष एक सौ 25 लाख आदमी घायल होते हैं, जिनमें से 23 लाख मरने वाले वे होते हैं— जो शराबियों द्वारा किये गये गाड़ियों के ऐक्सीडेन्टों से मरते हैं। इन मरने वालों को अरबों रुपया सरकारें अनुग्रह राशि के रूप में देने पर मजबूर होती हैं। जितना

सरकारें देती हैं उससे कम से कम छः गुना धन इन मरने वालों को बीमा कम्पनियाँ भुगतान करती हैं। इन्हीं शराबी ड्राइवरों के कारण प्रति वर्ष 51 लाख आदमी घायल होकर अस्पतालों में भरती कराने पड़ते हैं। दवा–दारू डॉक्टरों की फीस, अस्पताल के चार्जेज के रूप में अरबों रुपया खर्च करना पड़ता है और उसके पश्चात् तब शुरू होते हैं भरपाई के ''क्लेम''। अरबों रुपये के वकीलों को भुगतान। अमेरिका सरकार का कहना है इन क्लेमों को निपटाने में न्यायधीशों का 13 प्रतिशत समय लग जाता है और पुलिस का 12 प्रतिशत से अधिक समय इनकी जाँच में खर्च हो जाता है। जजों, कचहरियों और पुलिस के सारे खर्चे सरकार को ही भुगतने पड़ते हैं।

ईमानदारी से अपनी छाती पर हाथ रखकर कोई बताए क्या इन खर्चों को काटने के पश्चात, शराब से किसी सरकार की कोई आमदनी हो सकती है?

(ग) इन दुर्घटनाओं में हजारों बच्चे अनाथ हो जाते हैं। हजारों बेटियाँ विधवा हो जाती हैं। लाखों की आजीविका के सहारे टूट जाते हैं। खरबों रुपये की राष्ट्रीय सम्पत्ति का नाश होता है।

(घ) दूसरी ओर इस शराब के कारण 30 प्रतिशत मर्द और औरतें, अपने जीवन साथी से बेवफाई करते हैं। 40 प्रतिशत जालसाजी की घटनायें शराब से जुड़ी होती हैं। 40 प्रतिशत देश के गुप्तराज़ ये शराबी विदेशियों को बेचते हैं। 33 प्रतिशत से अधिक तलाक के मामलों में पति या पत्नी का शराबी होना कारण होता है। 52 प्रतिशत बलात्कार शराब की उत्तेजना का परिणाम हैं। पुलिस भी 20 प्रतिशत शक्ति इन शराबियों से निपटने में लगाती है। हमारे देश के 62 प्रतिशत बच्चे केवल इसलिए विपन्न–कुपोषित, दुर्बल, एड़ियाँ, रगड़–रगड़ कर जीने वाले होते हैं, क्योंकि उनके माता–पिता में से कम से कम एक शराबी होता है।

प्रश्नः (2) शराब बन्दी हो जाने पर पर्यटकों के न आने से आर्थिक रीढ़ की हड्डी टूट जायेगी। उत्तराँचल तबाह व बरबाद हो जायेगा :–

(क) क्या पर्यटक की यही परिभाषा कि वह शराब अवश्य पीता हो? क्या बिना शराब के पर्यटक की कल्पना नहीं हो सकती? भारत में केवल उत्तराँचल ही एक प्रान्त नहीं है। आज कश्मीर की क्या स्थिति है? कितना विदेशी पर्यटक अब कश्मीर यात्रा पर जाता है? गिने–चुने जाने वालों में अधिक संख्या में वे होते हैं जो विदेशियों के लिए काम करते हैं। कश्मीर में ये मौज–मस्ती वाले पर्यटक न आने के बावजूद काश्मीरी मजूर की सारी अर्थ व्यवस्था आज अकेले वैष्णों देवी के मन्दिर पर आकर केन्द्रित हो गई है। वह आज के कश्मीर की आमदन का महान स्रोत बन गया है। जहाँ पहले वर्ष में मात्र 5 लाख यात्री आते थे। आज तीस लाख से ऊपर यात्री आते हैं। क्यों? वहाँ सरकार ने यात्रियों के लिए सुविधा के ढेर लगा दिये हैं। वहाँ कश्मीर में तो केवल एक वैष्णों देवी मन्दिर है या अमरनाथ का मन्दिर है। यहाँ उत्तराँचल का तो कण–कण बद्रीनाथ–केदारनाथ, तुंगनाथ और हेमकुण्ड है। यमनोत्री, गंगोत्री है। गंगा है, यमुना है, हरिद्वार है। यहाँ यात्रियों की संख्या क्यों नहीं बढ़ाई जा सकती? ये धार्मिक यात्री– यहाँ शराब पीने तथा मौज–मस्ती के लिए नहीं आयेंगे। उन्हें तो उत्तरांचल और

नागाधिराज हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य और फूलों की घाटियों की सुगन्ध खींच लायेगी। स्थानीय लोगों को न रोजगार की कमी रहेगी न काम धन्धे की।

(ख) विदेशी पर्यटकों को उत्तराँचल में आकर्षित करने के लिए शराब खोलना वैसा ही पाप कृत्य है जैसा किसी से काम निकालने के लिए युवती बेटी को पेश कर देना। इन विदेशी सैनानियों का पेट सिर्फ शराब से नहीं भरेगा, गाँव की बहू–बेटियों की इज्जत सरेआम इन होटलों में नीलाम पर चढ़ेगी। सारा होटल का माहौल उसी शराब में डूब जाएगा। हम नहीं समझते कोई आत्म–सम्मान वाला, अपने बेटियों को धन कमाने के लिए कोठों पर बैठाना पसन्द करेगा।

(ग) यह वहम है कि शराब की आय के बिना प्रान्त मर जाएगा। हम निवेदन करना चाहते हैं कि इस राज्य की कम से कम 35 प्रतिशत आबादी का गुजारा उन मनीआर्डरों से होता है जो उन्हें पेंशन के रूप में या वेतन के रूप में प्रतिमास प्राप्त होते हैं। उत्तरांचल का आम नागरिक व्यापारी नहीं है। सीमित बंधी आमदनी है। उसमें से यदि एक परिवार नित्य प्रति एक डिब्बी सिगरेट पी जाता है जो पाँच रूपये की आती है। 20 रु० प्रतिदिन की शराब पी जाता है। तो वर्ष भर में नौ हजार की शराब व सिगरेट पी जायेगा। यदि केवल 25 वर्ष ही पीए तो सवा दो लाख रूपये की शराब व सिगरेट पी गया। यदि यही धन बजाए शराब सिगरेट में खर्च करने के बैंक में जमा करता रहता तो 25 वर्ष बाद कोई भी बैंक उस परिवार को 17 लाख रुपया नकद अदा करता। राज्य के 35 प्रतिशत लोग बिना किसी विदेशी पर्यटक की सहायता के, बिना किसी के आगे गिड़गिड़ाए, बिना किसी के तलवे चाटे–विपन्नता से निकल कर सम्पन्न और स्वावलंबी बन जाते। कहाँ रह जाती गरीबी? कहाँ रह जाती बेरोजगारी? इस धन में से यदि 10 लाख रुपये बैंक में जमा करा दे तो 10 लाख रुपये का मालिक भी बना रहे, और एक लाख रुपया वार्षिक ब्याज भी बैंक से लेता रहे। शेष 7 लाख रुपये में भवन बनाये, कार स्कूटर खरीदे, भूमि खरीदे या व्यापार करे, बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाए, उसके तो सारे क्लेश दूर हो जाएंगे। दुःख की बदलियाँ छंट जायेगी और तब यह उत्तरांचल वास्तव में देव–भूमि, पावन भूमि बन जायेगा।

इसलिए शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना इस प्रान्त की अर्थव्यवस्था बिना किसी दूसरे की सहायता के सुधारने तथा स्वावलंबी बनाने की एक मात्र विधि है।

प्रश्न : (3) शराब बन्द हो जाने पर घर–घर नकली शराब बनने लगेगी और पड़ोसी राज्य शराब सप्लाई के अड्डे बन जायेंगे।

बाज़ार में जब 100 रुपये या 500 रुपये का असली नोट चलता है, तब नकली या जाली नोट बनाये जाते हैं और चलाये जाते हैं। असली के सहारे नकली करेंसी चलती है। लाईसैन्स की शराब मिलने पर नकली धड़ल्ले से बेची जा सकती है। पी जा सकती है। पिलाई जा सकती है। परन्तु यदि सरकारी शराब बन्द हो जाये तब नकली शराब बनाना और बेचना अत्यन्त कठिन हो जायेगा, लाना–लेजाना, पीना–पिलाना कठिन हो जाएगा। तब यहाँ नकली शराब नहीं बनेगी। हरियाणा में शराब बन्दी के दिनों में वहां शराब दूसरे राज्यों से आकर बिकने लगी थी। शराब

दूसरे प्रान्तों से आकर बिकना इस बात का प्रमाण था कि हरियाणा में नकली शराब बननी बन्द हो गयी थी या बननी कम हो गयी थी, वरना बाहर से क्यों आती? क्योंकि पड़ोसी प्रान्तों से स्मगल होकर यहाँ आयेगी, इसलिए शराब पर पाबन्दी न लगायी जाए, यह अनोखी दलील है। चोरी करना, डकैती करना, हत्या करना कानूनन जुर्म है। इनके विरुद्ध कानून बने हैं फिर भी चोरियाँ, हजारों डकैतियाँ, हजारों कत्ल होते हैं। पर आपने आज तक ये माँगें तो कभी नहीं की कि चोरी का कानून, डकैती या हत्या के कानून रदद कर दिये जायें, क्योंकि चोर–डकैत जुर्म करने के बाद दूसरे राज्यों में भाग जाते हैं और बच जाते हैं। फिर शराब के विषय में ही ऐसा क्यों?

प्रश्न : (4) शराब तो सदा से चलती आई है, चलती रहेगीः–

यह सम्भव है कि शराब बहुत पुराने समय से पी जाती रही हो, परन्तु भारत में अंग्रेजी राज्य से पहले शराब की अपवित्र कमाई को किसी सरकार ने आय का साधन नहीं बनाया।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में हम घर–घर द्वार–द्वार शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करते थे। माताएँ शराब की दुकानों पर धरने देती थीं। स्वयं गांधी बाबा ने घोषणा की थी। भारत स्वतंत्र होने पर सबसे पहला कार्य यह किया जायेगा कि कलम की एक नोक से बगैर मुआवजा दिये शराब बन्दी कर दी जायेबी। गाँधी ने स्पष्ट कहा था मुझे यह तो स्वीकार है कि मेरे बच्चे अनपढ़ रह जायें, परन्तु शराब की पाप की कमाई से, सरस्वती के मन्दिरों के दीपक जलें यह कतई स्वीकार नहीं है। इसी आदेश का परिणाम था, कि द्वितीय विश्व युद्ध होने से पूर्व मद्रास में जब पहली कांग्रेस सरकार बनी तो इस बात को ध्यान में रखा गया कि स्वतंत्र भारत में तो आबकारी की आमदनी बन्द हो जायेगी। इसलिए मद्रास सरकार ने एक नया टैक्स ईजाद किया और टैक्स का नाम रखा गया ''जनरल सेल्स टैक्स एक्ट।'' उसकी भूमिका में कहा गया था कि कल जब भारत स्वतंत्र हो जायेगा उसमें शराब का, आबकारी का टैक्स बन्द हो जायेगा। तब सरकार टैक्स की कमी को सेल्स टैक्स लगाकर पूरा कर सकेगी। आज–सेल टैक्स भी वसूल करना और आबकारी का टैक्स भी वसूल करना, सरकार की चरित्रहीनता होगी। देश के प्रति धोखा होगा। यह गाँधी की हत्या होगी। उत्तरांचल की जनता को सदा–सदा के लिए पंगु अपाहिज और दरिद्री बना देने की एक अनजाने में की गई व्यवस्था होगी।

वास्तविकता तो यह है कि स्वतंत्र भारत में कभी पूरे मन से पूरी लगन से, शराब बन्दी लागू करने का प्रयत्न किया ही नहीं गया। आधे–अधूरे मन से किये गये कार्यों का जो परिणाम हुआ करता है वही शराब बन्दी का हुआ है। इसलिए सरकार पूरे मन से इस पवित्र कार्य को करें। उत्तरांचल का जन–जन सरकार का साथ देगा। सरकार को दुआएं देगा।

प्रश्नः (5) शराब बन्दी से शराब के आदि हो गये लोग परेशान नहीं होंगे क्या?

(क) यदि मन में दृढ़ संकल्प हो और सत्संग मिले, शराबियों की सोहबत से दूर रहा जाय, शराब की उपलब्धता सरल न रह जाये, तो इस शराब की आदत से मुक्ति पाना कठिन नहीं है। जो सैनिक अपने राष्ट्र, देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए अपने सर, धड़ की बाजी लगा देता है। आग उगलती तोपों, बमबारी और मशीनगनों की गोलियों के सामने छाती तानकर खड़ हो जाता है, उस संकल्पशील महामानव के लिये यह कहना कि वह शराब बन्दी के मोर्चे पर कमजोर पड़ जायेगा उत्तरांचलीय वीरों

का अपमान करना है। सेना का एक–एक सिपाही बिना शराब के, बिना रोटी के भूखा रह कर भी दीवानों की तरह लड़ा है और युद्ध के प्रत्येक मोर्चे पर सफलता ने उसके कदम चूमें हैं। उत्तरांचल के ये वीर सैनिक अपनी मातृभूमि की लाज रखने के लिए उत्तरांचल की समृद्धि के लिए, इस पावन देवभूमि को देव भूमि बनाने के लिए, फिर संकल्पशील होंगे और इस मोर्चे पर भी विजय उनके चरण चूमेगी।

(ख) जब एक डॉक्टर सलाह देता है, शराब मत पीना मर जायेगा। तो बड़े से बड़ा अभ्यस्त पियक्कड़ शराब छोड़ देता है। यह प्रत्यक्ष है। फिर जीवन भर नियंत्रण में रहने वाला सिपाही, उत्तरांचल को मृत्यु के मुख से बचाने के लिए शराब बन्दी में राष्ट्र का साथ क्यों नहीं देगा?

(ग) ये माना कि कुछ लोगों को परेशानी हो सकती है, परन्तु ऐसा कौन सा कानून है, जिसके पालन से कुछ लोगों को परेशानी न उठानी पड़ती हो? कष्ट न उठाना पड़ता हो? क्या चोरी–डकैती, हत्या का कानून कुछ लोगों के लिए कष्ट कर नहीं हैं? क्या सेल टैक्स सब लोग मरजी से देना चाहते हैं? क्या आयकर देने वाले सब खुशी से आयकर दूते हैं? कानून बनाने ही तब पड़ते हैं, जब समाज के बहुसंख्य लोगों का हित उनसे बन्धा होता है। बहुजन सुखाय, बहुजन हिताय।

प्रश्न : (6) शराब बन्दी से शराब के व्यवसाय में लगे हजारों लोग बेरोजगार हो जायेंगे उसका क्या इलाज है।

(क) हमारा निवेदन है– हजारों लोग बेकार नहीं हो जायेंगे। लाखों आदमियों के जीवन में बहार आ जायेगी। उनके घरों में दोनों समय चूल्हा जलेगा– बच्चे कपड़े पहनेंगे, माताएँ–बहिनें और बेटियाँ नित्य होने वाली पिटाई से बच जायेंगे। पुरुषार्थी, मेहनती के लिए काम की न पहले कमी थी, न है, न तब रहेगी। हम प्रश्नकर्ता से पूछना चाहेंगे क्या इस देश के सौ करोड़ लोग– जो शराब का व्यवसाय नहीं करते–भूखे मरते हैं? क्या उनके पास करने का कोई काम नहीं है? क्या वे सारे, चोर–डाकू और मजुरिम बन गये हैं? यदि नहीं तो शराब का पाप का धन्धा बन्द करने वालों को काम क्यों नहीं मिलेगा? जो काम धन्धों की स्थिति आज देश की है, तब भी वही रहेगी।

(ख) महाभारत में एक वर्णन आया है अनुशासन पर्व अध्याय 50–51 चयवनऋषि तपस्या कर रहे थे। नदी तट का कटान हुआ और ऋषिराज पानी की लहरों में बह चले। बहते–बहते एक मछुवारे के जाल में फंस गए। मछुआरे ने जाल में फंसे महर्षि च्यवन को बाहर निकाला और राजा नहुष के दरबार में उपस्थित हो गया। महर्षि च्यवन ने राजा से निवेदन किया। पानी के तेज बहाव के कारण भूमि का कटान होने पर मैं स्वयं नदी में बह गया था। इसमें मछुवारे का कोई दोष नहीं है। इसने तो आज मेरा जीवन बचाया है। परन्तु इसे इस पुण्य कार्य अर्थात मेरा जीवन बचाने के बदले में मिला क्या? यदि कुछ मछलियां इसके जाल में फंस जाती तो उन्हें बेचकर ये मछवारा अपनी आज की रोजी चला लेता। परन्तु जाल में फंसा मैं। इस बेचारे की तो आज की मजूरी भी गई। इसलिए राजन। यदि आप प्रसन्न हों तो ये मान लें कि इसके जाल में फंसने वाला मैं ''च्यवन'' ही वह मछली हूँ जिसे बेचकर उस मछवारे ने अपनी जीविका चलानी है। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरा पूरा मूल्य आंक दिया जाय, और जो मूल्य बने, वह इस मछुवारे को दे दिया जाय। राजा ने आदेश दिया इस मछुवारे को एक

सहस्र स्वर्ण मुद्राएं दे दी जायें। च्यवन बोले राजन मेरा सही मूल्य लगाओं और वह मूल्य इसे दो। न कम न अधिक। राजा असंमजस में पड़ गया इस च्यवन का मूल्य कैसे तय करूं? इसी समय कोई तापस सन्यासी राजदरबार में आ गया। राजा नहुषने उस सन्यासी से प्रार्थना की भगवन इस महात्मा च्यवन का सही–सही मूल्य लगा दीजिए। बताइये इस मछुवारे को क्या दे दूँ कि ये ऋषिराज च्यवन सन्तुष्ट हो जाएं? सन्यासी ने अपना मुख महर्षि च्यवन की ओर घुमाया और कहा–इतिष्ठोतिष्ठ विप्रर्षे गवाक्रीतोऽसि मया। एतन्मूल्यमहं मन्ये तव धर्मावतांवर। 51–52। हे महर्षे। ये एक बछड़ी वाली गाय है। मैंने तुम्हें इसके बराबर मान लिया है। यह बछिया और गाय देकर मैंने तुम्हारा पाई–पाई मूल्य चुका दिया है। च्यवन प्रसन्नता से झूम उठे और बोले सन्यासी तुम धन्य हो– मेरा मूल्य लगाकर मुझे बन्धन से मुक्त कर दिया।

महाभारत कार ने इस कथा के माध्यम से कई संदेश एक साथ दे दिए हैं। प्रथम तो यह कि एक व्यक्ति अपना दैनिक जीवन चलाने के लिए मछलियां पकड़कर बेचने या और किसी निरीह प्राणी की हिंसा करके रोटी तो कमा सकता है परन्तु इनकी हिंसाकर के, पाप का भागीदार भी हो जाता है। इसलिए बजाय मछलियां पकड़ने या पशु हिंसा कर धन कमाने के, यदि वह दुधारू, बछियावाली गाय पाल ले, तो उसके सारे जीवन का निर्वाह बिना पाप–बिना किसी की हत्या के – सरलता से हो जायेगा। इस बात पर बल देने के लिये यहाँ तक कह दिया कि सोने की एक हजार मोहरें एक बार मिल जाने से भी तेरे परिवार–के निर्वाह की निश्चिंतता नहीं स्वीकारी जा सकती। परन्तु एक दुधारू गाय जिसके नीचे बछिया है वह समस्त जीवन के लिए, आय का एक ऐसा साधन हो सकती है, जिसके भरोसे वह निश्चिंत जीवनयापन कर सकता है। इसलिए हमारा कहना है शराब का व्यवसाय छोड़ने वाले और प्रान्त के प्रत्येक गरीब परिवार को गोपालन के लिए प्रोत्साहन दिया जाय और गोपालन द्वारा अपना जीवन निर्वाह का अवसर दिया जाय तो प्रत्येक साधारण परिवार के पास प्रतिमास 4 हजार से 8 हजार रूपये मासिक की आय का साधन सरलता से हो सकता है।

(ख) सरकार प्रत्येक गरीब और बेकार परिवार को कम से कम चार दुधारू गायें खरीदने के लिए कर्जा दें या उन्हें गाय दें। जरसी गाय के नई होने में अत्यन्त कठिनाई हो जाती है। कई बार तो तीन चार साल तक गाय नई नहीं होती। इसलिए ठीक व्योंत बाकी साहिवाल–सिन्धी आदि देशी या विदेशी नसलों की ऐसी दो दो गाय किसानों को पहली बार दे दी जायें जो कम से कम 10–10 लीटर दूध अवश्य देती हों। इस प्रकार 20 लीटर प्रतिदिन दूध कोपरेटिव सोसायटी के हाथ बेच देने पर भी और यदि गोपालक 50 रु० का खर्चा प्रतिदिन का करें तो भी, 150 रु० प्रतिदिन 4500 रु० मासिक की आमदनी पैदा कर सकता है। दो गाएं पहली दी गई थी अब इन गायों को दूध से छूट जाने पर– सरकार पुनः उन्हें दो दो और गाएं कर्जे पर देवें तो तीसरे वर्ष से सरकार को कुछ देना नहीं पड़ेगा उन गायों की बछिया स्वयं आगे दूध देने लायक हो जाएंगी और तब उन्नति की वे सीढ़ियां प्रारम्भ होगी कि कुछ ही दिनों में गोरक्षकों के पास 10–10 बीस–बीस गायें हो जाएंगी। तब आय इतनी तेज से बढ़ेगी कि कल्पनातीत हो जाएगी।

(ग) गाय को पालने में उस समय तक कोई कठिनाई नहीं होती जब तक गाय दूध देती है। इसलिए गायों के लिए प्रत्येक जिले में सरकार 2–2–4–4 विशाल

गोशालाएं बनाए जहां 500–500 या 1000–1000 गाय रह सकें। उनके लिए बड़े शैडों का निर्माण कराया जाय और गोशालाओं की स्थापना के समय इस बात का पूरा ध्यान रक्खा जाय कि ये गोशालाएं ऐसे जंगलों के निकट भूमि में स्थापित भूमि में स्थापित की जाएं कि गौओं के चराने की समस्या हल जो जाय। इन गोशालाओं में आधे दुधारू पशु रक्खे जायें और आधे फण्डर। सरकार प्रति पशु दो सो रूपया मासिक केवल दो वर्ष तक व्यय करे। उसके पश्चात ये गोशालाएं भी अपने पांव पर खड़ी हो जाएंगी और किसानों, गोपालकों, नगरों की वे समस्त गाएं बैल, सांड जो अब दूध नहीं देती, या हल नहीं चलाते, या बेकार हो गए हैं वे भी इन गोशालाओं में आराम से पल जायेंगे और अब आगे सरकार को कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। स्वतः अपनी मौत से मरने वाला पशु अपनी हड्डियां, अपना मांस, अपना चरसा, सींग, अपनी खाल, सब यही गोशाला के अन्दर ही छोड़ जायेगा। उसके इन मृत ढांचो से दूसरे जीवित पशुओं का जीवनयापन हो जाया करेगा।

(क) इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभी उत्तरांचल का सरकार से निवेदन है कि समस्त उत्तरांचल में शराब बनाने, शराब बेचने, शराब रखने, शराब पीने और पिलाने पर, पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाय।

(ख) नई नौकरियाँ देते समय नौकरी की शर्तों में एक शर्त यह भी रहे कि नौकरी चाहने वाला एक शपथ पत्र लिखकर दे कि मैं शराब नहीं पीता हूँ। यदि कभी शराब पीऊं तो मुझे नौकरी से हटा दिया जाय।

ऐसा होने पर कम से कम सरकारी कर्मचारियों की नई पीढ़ी, तो इस रोग से बहुत कुछ मुक्त हो जायेगी। कार्य में चुस्ती आयेगी। रिश्वत घटेगी सरकार और जनता की सिरदर्दी घटेगी।

(ग) सरकार शराब के विरुद्ध कानून बनाकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री न कर दे। इस पवित्र कार्य में उत्तरांचल की समस्त आर्य समाज, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरांचल की अगवानी में समूचे प्रान्त में सरकार का भरपूर सहयोग देने को कृत संकल्प हैं। सरकार साधारण आर्थिक सहायता करे और जिले के अधिकारी सहयोग करें, तो, प्रान्त भर में शराब के विरूद्ध एक जिहाद खड़ा किया जा सकता है। जनजागृति का एक आन्दोलन चलाया जा सकता है। शराब बन्दी के लाभ और शराब पीने की हानियां बताकर, सारे प्रान्त में शराब के प्रति लोगों के मन में एक घृणा का भाव पैदा किया जा सकता है और जब लोगों के मन में यह भाव जन्म ले लेगा तब सरकारी शराब बन्दी सफल हो जायेगी। वह जनता की भावना, जनता की कामना बन जायेगी।

(घ) शराब बन्दी के इस पवित्र कार्य में हम उत्तरांचल की जनता का सहयोग चाहते हैं। प्रत्येक शराब पीने वाला अपने परिवार की गरीबी का जिम्मेदार है। शराबी शराब, नहीं पीता है अपनी औलाद का खून पीता है। यदि कामना हो कि तुम्हारे घरों में सुख शांति आए, तुम्हारे घरों में शिक्षित चरित्रवान सन्तानें पनपें। यदि चाहते हो तुम्हारी गरीबी मुफलीसी दूर जो जाए तो आज से ही प्रतिज्ञा कर लो कि न तो शराब पियेंगे, न पिलाएंगे, और न शराब की अपवित्र कमाई अपने घर में आने देंगे। प्रान्त की तकदीर बदल जायेगी। देवभूमि देवभूमि बन जाएगी। आपका कल्याण हो।

शराब

—**काशीनाथ आर्य,** एम.ए., बी.टी. योगाचार्य

एक राजा अपने मन्त्री के साथ जंगल में शिकार खेलते हुए कहीं दूर निर्जन स्थान में निकल गया, पूरे दिन की भाग—दौड़ के पश्चात भी कोई शिकार नहीं मिला, राजा अपने आपको शारीरिक व मानसिक रूप से बहुत ही थका हुआ सा महसूस कर रहा था।

अतः आगे का कार्यक्रम अगले दिन पर छोड़कर वापस शहर की राह ली, शहर में एक निश्चित स्थान पर रुकते हुए उसने अपने मन्त्री को आदेश दिया कि चाहे जितना भी धन खर्च हो जाये, तुम मेरे लिए जाकर शराब लेकर आओ। मन्त्री ने उन्हें शराब न पीने की सलाह दी व बहुत समझाने की कोशिश की, परन्तु उन्होंने मन्त्री की एक न सुनी।

आखिर विवश होकर मन्त्री आज्ञापालनार्थ शहर में चला गया, वहाँ उसने दो—चार बोतलें शराब खरीदी, परन्तु मन्त्री पूरा बुद्धिमान था। उसने सोचा कि शराब पीने के लिए मांस, मछली या अण्डे अवश्य ही साथ होने चाहिए, अतः उसने कुछ मांस कुछ मछली तथा कुछ अण्डों के साथ—साथ अन्य चटपटे स्वादिष्ट पदार्थ भी साथ ले लिये। तब मन्त्री को ध्यान आया कि— अरे!

जब राजा साहब इन सबका सेवन करेंगे तो उन्हें अन्त में एक सुन्दरी की भी तो आवश्यकता पड़ेगी, वे मुझे फिर से भेजेंगे, तो क्यों न मैं इधर से ही बन्दोबस्त करके चलूँ। इससे राजा साहब प्रसन्न होंगे और मैं पुनः परेशान होने से बच जाऊँगा।

बस! फिर क्या था? मन्त्री ने अन्य सामान के साथ—साथ गणिकाएँ भी साथ ले ली, क्योंकि कोई भी किसी भी प्रकार का अर्थाभाव था ही नहीं। थोड़ा विचार करने के बाद उसे याद आया कि राजा साहब जब मांस, मदिरा व गणिकाओं का जी भर कर उपभोग करेंगे तो निश्चय ही भोग के बाद रोग का होना स्वाभाविक है, तब उस स्थिति में चिकित्सक की आवश्यकता पड़ेगी, तो दो बार कौन चिकित्सक को बुलाने आयेगा? अतः उसने अच्छे—अच्छे चिकित्सक भी पैसे देकर साथ ले लिये, परन्तु उसने सोचा कि दवा तो रोगों को दबाती है, जिससे रोगी अच्छा न होकर उलटा अस्वस्थ होकर मृत्यु को प्राप्त होता है, फलस्वरूप राजा की भी मृत्यु निश्चित होगी, अतः क्यों न मैं अन्त्येष्टि का पूरा इन्तजाम ही करता चलूँ, ऐसा सोचकर उन मन्त्री महोदय ने चार गाड़ियां लकड़ी, चन्दन, चार टीन घी व सामग्री तथा अन्य आवश्यक सामान के साथ—साथ कफ़न भी साथ ले लिया, और राजा के पास चल पड़ा।

इधर राजा मन्त्री की प्रतिक्षा में टकटकी लगाये हुए बैठा था, कि कब मन्त्री महोदय आयें और कब वह अपने भोग विलास की वस्तुओं का उपयोग करे। सहसा राजा की दृष्टि सामने आ रहे उस काफिले पर पड़ी जो कुछ ही क्षणों बाद उसके सामने मौजूद था जिसमें वह मन्त्री महोदय सबसे आगे थे।

राजा ने आश्चर्य चकित होकर मन्त्री महोदय से पूछा—

''यह सब क्या है''?

मन्त्री जी ने बड़ी ही विनम्रता के साथ प्रेमपूर्वक उत्तर दिया—

''महाराज! शराब का आनन्द बिना मांस के नहीं है और इन दोनों के बाद अगर मैथुन की व्यवस्था हो जाये तो जीवन का आनन्द ही कुछ और हो जाता है''।

इस पर महाराज ने कहा कि–

आप तो बडे ही समझदार व्यक्ति हैं, ऐसा बुद्धिमान मन्त्री पाकर हम अपने आपको धन्य मानते हैं।

परन्तु मन्त्री की बात अभी पूरी भी नहीं हो पाई थी कि, उसने वार्ता का क्रम आगे जारी करते हुए कहा–

''महाराज! इन सभी का उपभोग करने के बाद रोग का होना अनिवार्य है, जिसके निवारणार्थ चिकित्सकों का दल भी आपकी सेवा में मौजूद है''।

पुनः राजा ने पूछा कि इतनी गाड़ियाँ लकड़ी की और ये अन्य सामान क्या है? तो उत्तर मिला कि रोग के बाद मृत्यु और उसके बाद अन्त्येष्टि भी तो करनी होगी।

बस! इतना सुनना था कि राजा आश्चर्यचकित रह गया और उसके ज्ञान–चक्षु खुल गये और उसके मुंह से सहसा निकल पड़ा.......... इसका मतलब है कि–

''सभी पापों की जड़ यह शराब है''

और राजा ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा कि मैं इसे नहीं पिऊँगा।

किसी ने ठीक ही कहा है कि– **''शराब शरीर के अन्दर तो बुद्धि शरीर के बाहर''।** अगर शराब को कोई छोटा व्यक्ति या आदिवासी आदि पीते हैं तो यह उनकी असभ्यता तथा बुराई मानी जाती है, परन्तु अगर उसे ही कोई उच्च अधिकारी, नेता व जैन्टलमैन कहलाने वाला व्यक्ति पीता है तो वह सभ्यता व अच्छाई तथा फैशन के दायरे में आ जाती है। परन्तु यह सर्व विदित है कि इससे सर्वनाश निश्चित है।

प्रत्यक्ष उदाहरण देखने के लिए आपको भारत के हर शहर व गाँव में जाना पड़ेगा, जहाँ हर गली व मौहल्ले में शराब की दुकानें मौजूद हैं। मुर्गी व अण्डों के फॉर्म भी यहाँ उपलब्ध हैं। लोग इन सबका सेवन कर रहे हैं और प्रायः ये लोग वहाँ चौराहों पर ताश खेलते और मदिरापान करते हुए नजर आ जायेंगे।

किसी शराबी ने ठीक ही कहा है कि–

पियो–पियो और पियो, पीकर गिरो, और गिरकर फिर पिओ, पीते ही रहो, जब तक कि होश रहे, तो अन्त में मुक्ति मिल ही जायेगी, क्योंकि ऋषि–मुनि सोमरस कहकर इसी का पान किया करते थे। एक–दो ही नहीं भारतवर्ष में ऐसे लाखों–करोड़ों गाँव व शहर मौजूद हैं, जहाँ पर आपको शराबियों के ये अद्भुत कृत्य देखने को मिल जायेंगे।

शराबियों ने शराब तो छोड़ी नहीं, बल्कि उल्टा उसकी प्रशंसा में अनेकों कहानियाँ, शेर–ओ–शायरियाँ, कविताएँ आदि प्रचलित कर रक्खी हैं, जैसे–

या खुदा इंसान बनाकर, मेरी मिट्टी खराब की।

क्या ही अच्छा होता, जो मुझे बनाता भट्टी शराब की।।

इसी प्रकार अनेकों कवियों ने अपने–अपने दृष्टिकोणों पर आधारित शराब की प्रशंसा में अनेकों रचनाएं रच डालीं, जिससे आने वाली पीढ़ी भ्रमित होती चली गयी।

अब तो इसका प्रचलन स्त्री–पुरुष, बच्चे, बूढ़े सभी में प्रायः देखा जा सकता है। इस विषय पर काफी साहित्य की संरचना भी हुई है, जिनमें अनेकों तरह से विभिन्न लेखकों ने अपने–अपने अनुभव उद्धृत किये हैं।

शराब पीने की आदत अगर किसी व्यक्ति को एक बार पड़ गयी तो वह आदत धीरे–धीरे अपना विकराल रूप धारण कर लेती है, और उस पीने वाले की गिनती पियक्कड़ों में शामिल हो जाती है। अतः यह निश्चित है कि शराबी व्यक्ति कोई भला मनुष्य नहीं हो सकता।

गेहूँ के पौधे में रोगनाशक ईश्वरप्रदत्त अपूर्व गुण

—श्रीचिन्तामणिजी पाण्डेय, सा.भू., ए.एम.टी.आई.

गेहूँ का प्रयोग हम सभी लोग बारहों मास भोजन में करते रहते हैं, पर उसमें क्या गुण हैं, इस पर लोगों ने बहुत कम विचार किया है। मोटे तौर से हम लोग इतना ही जानते हैं कि यह एक उत्तम शक्तिदायक खाद्य पदार्थ है। कुछ वैद्यों ने यह भी पता लगाया है कि मुख्य शक्ति गेहूँ के चोकर में है, जिसे प्रायः लोग आटा छान लेने के बाद फेंक देते हैं अथवा जानवरों को खाने के लिये दे देते हैं; स्वयं नहीं खाते। हानिकारक महीन आटा या मैदा खाना पसंद करते हैं और लाभदायक चोकरसहित मोटा आटा खाना नहीं पसंद करते। फल यह होता है कि शक्तिवर्धक वस्तु न खाकर गेहूँ के अंदर का शक्तिरहित गूदा (मैदा) खाते रहने से हम लोग जीवन भर अनेक प्रकार की बीमारियों से पीड़ित रहा करते हैं। प्राकृतिक चिकित्सक लोग प्रायः चोकर सहित आटा खाने पर जोर देते हैं, जिससे पेट की तमाम बीमारियाँ अच्छी हो जाती हैं। लोग यह जानते हैं कि 24 घंटे भिगोकर सबेरे गेहूँ का नाश्ता करने से अथवा चोकर का हलवा खाने से शक्ति आती है। फिर भी लोग झंझट से बचने के लिये डॉक्टरी दवाई के फेर में अधिक रहते हैं; जिसके सेवन से नयी–नयी बीमारियाँ दिनोदिन बढ़ती जा रही हैं, फिर भी लोग चेतते नहीं। स्त्रियाँ तो विशेषकर दवा की भक्तिनी हो गयी हैं। घर में रोज काम में आने वाली और भी अनेक चीजें हैं, जिनके उचित प्रयोग से अनेक साधारण बीमारियाँ अच्छी हो सकती हैं, जिन्हें कि हमारी बूढ़ी–बाढ़ी माताएँ अधिक जानती थीं, पर आजकल की नयी स्त्रियाँ उनके बनाने की झंझट से बचने के लिए बनी–बनायी दवाइयों का प्रयोग ही ज्यादा पसंद करती हैं, फिर चाहे उनसे दिन–दिन स्वास्थ्य गिरता ही क्यों न जाय।

इसी उपर्युक्त गेहूँ के सम्बन्ध में आज हम पाठकों को एक महत्व की बात बताना चाहते हैं—

अमेरिका की एक महिला डॉक्टर ने गेहूँ की शक्ति के सम्बन्ध में बहुत अनुसंधान तथा अनेकानेक प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया है कि अनेक असाध्य रोगियों पर गेहूँ के छोटे–छोटे पौधों का रस (Wheat Grass Juice) देकर उनके कठिन–से–कठिन रोग अच्छे किये जा सकते हैं। वे कहती हैं कि 'संसार में ऐसा कोई रोग नहीं है, जो इस रस के सेवन से अच्छा न हो सके।' कैंसर के बड़े–बड़े भयंकर रोगी उन्होंने अच्छे किये हैं, जिन्हें डॉक्टरों ने असाध्य समझकर जवाब दे दिया था और वे मरणप्राय–अवस्था में अस्पताल से निकाल दिये गये थे। ऐसी हितकर चीज यह अद्‌भुत Wheat Grass Juice साबित हुई है। अनेकानेक भगंदर, बवासीर, मधुमेह, गठियाबाई, पीलियाज्वर, दमा, खांसी आदि के पुराने–से–पुराने असाध्य रोगी उन्होंने इस साधारण–से रस से अच्छे किये हैं। बुढ़ापे की कमजोरी दूर करने में तो यह रामबाण ही है। अमेरिका के अनेक बड़े–बड़े डॉक्टरों ने इस बात का समर्थन किया है और अब बम्बई और गुजरात प्रान्त में भी अनेक लोग इसका प्रयोग करके लाभ उठा रहे हैं। भयंकर फोड़ों और घावों पर इसकी लुगदी बाँधने से जल्दी लाभ होता है।

इसके रस को लोग Green Blood की उपमा देते हैं, कहते हैं कि यह रस मनुष्य के

रक्त से 40 फीसदी मेल खाता है। ऐसी अद्‌भुत चीज आज तक कहीं देखने–सुनने में नहीं आयी थी। इसके तैयार करने की विधि बहुत ही सरल हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने घर में इसे आसानी से तैयार कर सकता है। कहीं इसे मोल लेने जाना नहीं पड़ता; न यह कहीं पेटेंट दवा के रूप में बिकती है। यह तो रोज ताजी बनाकर ताजी ही सेवन करनी पड़ती है।

इस रस के बनाने की विधि इस प्रकार है–

आप 10–12 चीड़ के टूटे–फूटे बक्सों में अथवा मिट्टी के गमलों में अच्छी मिट्टी भरकर उनमें बारी–बारी से कुछ उत्तम गेहूँ के दाने बो दीजिये और छाया में अथवा कमरे या बरामदे में रखकर यदा–कदा थोड़ा–थोड़ा पानी डालते जाइये, धूप न लगे तो अच्छा है। तीन–चार दिन बाद पेड़ उग आयेंगे और आठ–दस दिन के बाद बीता–डेढ़ बीता (7–8 इंच) के हो जायेंगे, तब आप उनमें से पहले दिन के बोये हुए 30–40 पेड़ जड़सहित उखाड़कर जड़को काटकर फेंक दीजिये और बचे हुए डंठल तथा पत्तियों को (जिसे Wheat Grass कहते हैं) धोकर साफ सिलपर थोड़े पानी के साथ पीसकर आधे गिलास के लगभग रस छानकर तैयार कर लीजिये और रोगी को तत्काल वह ताजा रस रोज सबेरे पिला दीजिये। इसी प्रकार शाम को भी ताजा रस तैयार करके पिलाइये– बस आप देखेंगे कि भयंकर–से–भयंकर रोग आठ–दस या पंद्रह–बीस दिन बाद भागने लगेंगे और दो–तीन महीने में वह मरणप्राय प्राणी एकदम रोगमुक्त होकर पहले के समान हट्टा–कट्टा स्वस्थ मनुष्य हो जायेगा। रस छानने में जो फुजला निकले, उसे भी आप नमक वगैरह डालकर भोजन के साथ खा लें तो बहुत अच्छा है। रस निकालने के झंझट से बचना चाहें तो आप उन पौधों को चाकू से महीन–महीन काटकर भोजन के साथ सलाद की तरह भी सेवन कर सकते हैं, परंतु उसके साथ कोई भी फल न मिलाये जाएं। साग–सब्जी मिलाकर खूब शौक से खाइये, आप देखियेगा कि इस ईश्वरप्रदत्त अमृत के सामने डॉक्टर वैद्यों की दवाइयाँ सब बेकार हो जायेंगी; ऐसा उस महिला डॉक्टर का दावा है।

गेहूँ के पौधे 7–8 इंच से ज्यादा बड़े न होने पायें, तभी उन्हें काम में लाया जाय। इसी कारण 10–12 गमले या चीड़ के बक्स रखकर बारी–बारी से (प्रायः प्रतिदिन दो–एक गमलों में) आपको गेहूँ के दाने बोने पडेंगे। जैसे–जैसे गमले खाली होते जाएं, वैसे–वैसे उनमें गेहूँ बोते चले जाइये। इस प्रकार यह गेहूँ घर में प्रायः बारहों मास उगाया जा सकता है।

उक्त महिला डॉक्टर अपनी प्रयोगशाला हजारों असाध्य रोगियों पर इस Wheat Grass Juice का प्रयोग किया है और वे कहती हैं कि उनमें से किसी एक के विषय में असफलता नहीं हुई।

रस निकालकर ज्यादा देर नहीं रखना चाहिये। ताजा ही सेवन कर लेना चाहिये। घंटा–दो–घंटा रख छोड़ने से उसकी शक्ति घट जाती है और तीन–चार घंटे बाद तो वह बिलकुल शक्तिहीन हो जाता है। डंठल और पत्ते इतनी जल्दी खराब नहीं होते। वे एक दो दिन हिफाजत से रखे जाएं तो विशेष हानि नहीं पहुँचती।

इसके साथ–साथ आप एक काम और कर सकते हैं, वह यह कि आप आधा कप गेहूँ लेकर धो लीजिये और किसी पात्र में डालकर उसमें दो कप पानी भर दीजिये, बारह घंटे बार वह पानी निकालकर आप प्रातः–सायं पी लिया कीजिये। वह आपके रोग को निर्मूल करने में और अधिक सहायता करेगा। बचे हुए गेहूँ आप

नमक–मिर्च डालकर वैसे भी खा सकते हैं अथवा पीसकर हलवा बनाकर सेवन कर सकते हैं या सुखाकर आटा पिसवा सकते हैं– सब प्रकार लाभ–ही–लाभ है। ऐसा उपयोगी है यह रोज काम में आने वाला गेहूँ।

मालूम होता है हमारे ऋषि–मुनि लोग इस क्रिया को पूर्णरूप से जानते थे। उन्होंने स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले पदार्थों को नित्य के पूजा–विधान में रख दिया था, जिसमें लोग उन्हें भूल न जाएं और नित्य उनका प्रयोग अवश्य करें; जैसे– तुलसीदल, बेलपत्र, चन्दन, गंगाजल, गोमूत्र, तिल, मधु, रुद्राक्ष आदि–आदि। इसी प्रकार अनुष्ठान में जौ का प्रयोग और जौ बोकर उसके पौधे उगाना ही पूजा का एक विधान रखा था, जो प्रथा आज तक किसी–न–किसी रूप में चली आ रही है। गेहूँ और जौ में बहुत अन्तर नहीं है। बहुत सम्भव है, जौ के छोटे–छोटे पौधों में जीवनीशक्ति अधिक हो। सम्भव है, इसी से पूजा में जौ को ही प्रधानता दी गयी है, परंतु हम लोग इन स्वास्थ्यवर्धक चीजों को केवल पूजा की सामग्री समझकर उनका नाममात्र का प्रयोग करते हैं– स्वास्थ्य के विचार से यथार्थ मात्रा में उनका सेवन करना हम भूल ही गये हैं।

ऐसा है यह गेहूँ के पौधों में भरा हुआ ईश्वरप्रदत्त अमृत! समर्थ पाठकों को चाहिये कि वे इस अमृत रस का सेवन कर स्वयं सुखी हों और लाभ मालूम हो तो परोपकार के विचार से इसका यथाशक्ति प्रचार करके अन्य लोगों का कल्याण करें और स्वयं महान पुण्य के भागी हों।

जीवनोपयोगी संदेश

☞ व्यर्थ में इच्छाएं न बढ़ाएं, यदि आपकी आवश्यकताएं पूरी हो चुकी हैं। याद रखें- आवश्यकताएं पूरी हो सकती हैं, इच्छाएं नहीं।

☞ बीती दुःखदायक बातों को याद करने से दुःख बढ़ता है, उनको याद न करें। बीती अच्छी घटनाओं को याद करके उनसे प्रेरणा लेकर उत्साही बनें।

☞ अपने दुःखी भूतकाल को बार-बार याद न करें, अन्यथा यह कार्य आपके वर्तमान काल के सुख को भी बिगाड़ देगा। हमेशा खुश रहें।

☞ हम सोचते हैं- ''दूसरों का जीवन हमसे अच्छा है''। हम भी तो किसी और के लिए ''दूसरे'' हैं या नहीं? फिर हम खुद से संतुष्ट क्यों नहीं?

☞ 'सभी लोग खराब नहीं हैं, बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं।' यदि यह सत्य हम समझ लें, तो बहुत से रिश्ते टूटने से बच सकते हैं।

सच्चा आर्य समाजी अमीर ही रहता है

—ओमप्रकाश अग्रवाल

1. आर्य समाज सबके लिए है

आर्य समाज सबके लिए है। यह किसी जात–पात को नहीं मानता। एक बात का ज़रूर ध्यान रखना पड़ता है कि गन्दगी न हो। हवन और संध्या कोई भी किसी भी जाति का क्यों न हो, वह कर सकता है। आर्य समाज की ऐसी मान्यता है। आर्य समाज पढ़ाई है। एक तरह का सीखने वाला तरीका है। उसमें कोई भी दाखिल हो सकता है। आर्य समाज का आधार वेद हैं। वेद अनादि काल से हैं। उस समय जात–पात का कोई नाम नहीं था। आर्य समाज को समझो। आर्य समाज सस्ती पद्धति है, कोई दिखावा नहीं, कोई बन्धन नहीं, कोई पैसा नहीं रखना पड़ता, एक सीधा रास्ता सबके लिए है। हवन परमात्मा का मुख है। अग्नि देवता कहा जाता है। इसलिए सफाई का बहुत महत्त्व रहता है। आर्य समाज मानता है। इन्सान की पहचान ही काफी होती है। किसी जाति के हो ऐसा कुछ नहीं होता।

जब परमात्मा किसी को संसार में भेजता है तो सबके लिए एक ही तरीका अपनाता है। पूरी दुनिया में एक ही सिलसिला है। कहीं कुछ भेद नहीं है। काले गोरे का भेद मौसम के हिसाब से होता है। मगर शक्ल में, अक्ल में, उसको सब समझ होती है। जब परमात्मा किसी के साथ भेदभाव नहीं करता तो हम क्यों करें? इसलिए आर्य समाज सबको बराबर समझता है। जो लोग अपना धर्म ऊपर मानते हैं उनसे आर्य समाज दूर रहता है। इसलिए आर्य समाज को समझो। भेदभाव रहित सीधा जीवन गुज़ारो। संसार में कोई छोटा–बड़ा नहीं है। कर्म के अनुसार अगला जीवन मिलेगा। जैसा बीज होगा वैसा फल उगेगा। आओ, संसार की असली बातों पर विचार करें। जात–पात सिर्फ इन्सान की देन है। कुछ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए इसका नाम दिया था। इन्सान को छोड़कर कल के लिए कुछ भी नहीं है।

2. ईश्वर के स्वरूप को जानो

अगर किसी को देखना हो तो उसकी बनाई चीज़ों को देखना चाहिए। अगर ईश्वर के बारे में जानकारी चाहते हो तो उसकी बनी सृष्टि को देखना चाहिए। ईश्वर सीधा किसी के पास नहीं आता। वो अपने भीतर ही है। उसकी लीला को देखा समझा जा सकता है। आप पानी की व्यवस्था को ही देखें तो पता चलेगा कि कितना ज़बरदस्त उसका इन्तज़ाम है। पानी के बिना संसार चल नहीं सकता। पहाड़ों पर पानी बरसता ज़्यादा है मगर टिक नहीं सकता। उसके लिए ईश्वर ने पहाड़ों पर स्रोत बनाए। बर्फ का विधान बनाया। गर्मी में पानी की ज़्यादा ज़रूर होती है। बर्फ पिघलती रहती है। सर्दी में पानी की ज़रूरत कम होती है तो बर्फ बनती रहती है फिर धीरे–धीरे पानी नदी–नालों से नीचे की ओर आता है और आखिर में उसी में लीन हो जाता है जहाँ उसकी मंज़िल समुद्र होती है। फिर बादल बनते हैं और वर्षा होती है और वही क्रम बनता चला जाता है।

किसी सरकार को कहो हिमालय पर पानी की कुछ मात्रा डाल दे तो क्या वो डाल सकता है? नहीं डाल सकता। सारी दुनिया का पेट्रोल एक दिन में खर्च भी किया जाए तो भी कोई हिमालय पर बर्फ नहीं जमा सकता। ईश्वर का विधान ही है कि सूर्य अपनी ड्यूटी पर रोज़ आता है। बिना भेदभाव किए चोर और साधु सबको एक साथ अपनी रोशनी देता है। ईश्वर के घर में कोई भेदभाव नहीं है। चींटी बनाई उसमें भी चलने–फिरने की मशीन लगा दी। कहते हैं कि मच्छर में वज़न नहीं होता फिर भी वो उड़ता है, बोलता है, अपनी जीविका बनाता है, सन्तान भी पैदा करता है। कोई

साईसदान ऐसा पैदा हो मशीन भी बनाए, वज़न भी ना हो। हाथी बनाया जिसको मन भर खाने के लिए रोज़ चाहिए, मगर सब कुछ चल रहा है। हमारे वेद हमको बहुत बातें बताते हैं। आर्य समाजी ईश्वर को नहीं मानते, ऐसा नहीं सोचना चाहिए। यह गलत धारणा है। ईश्वर को जानकर मानो। पहले ईश्वर को जान लो। जिसने कपड़े रंग लिए उसी के पीछे हो लिए, किसी ने कहा तू ऐसा कर, वैसा करने लग गए। यह तरीका ठीक नहीं है। चलते–फिरते मानव की सेवा करना ज़्यादा अच्छा लगता है। दान करना अच्छी बात है, उससे भी ज़्यादा अच्छा है गन्दी कमाई ना करो। विचार करो, सही क्या है? खुद विचार करो। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जान लेने से बहुत लाभ मिलेगा। गीता में भी यही लिखा है– संसार में कर्मशील बनो। ईश्वर को इधर–उधर मत देखो तो मंज़िल आसान हो जाएगी।

3. व्रत का अर्थ क्या होता है?

व्रत का अर्थ संकल्प करना होता है। मैं यह व्रत लेता हूँ कि आज से मैं शराब नहीं पीऊँगा। व्रत कवच का काम करता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने व्रत लिया कि माँस नहीं खाऊँगा। एक दिन किसी पार्टी में गए। उनके आगे माँस परोसा गया। अब वह माँस खाना छोड़ चुके थे। उन्होंने सबके सामने माँस की प्लेट ज़मीन पर दे मारी ताकि लोग पूछें यह क्या? आपने ऐसा क्यों किया? तो बहुत बढ़िया उत्तर दिया– मैं सबको बताना चाहता था मैंने माँस खाना छोड़ दिया है। इसलिए इसको फेंका है। अब उनका व्रत और भी पक्का हो गया। लोगों को पता लग चुका था। उनकी मूर्ति टाउन हाल दिल्ली चाँदनी चौक में लगी है। उन्होंने अनेक संस्थाएँ चलाईं फिर वे सन्यासी बन गए। व्रत का अर्थ भूखा रहना नहीं होता। अगर कोई व्रत करके पेट की सफाई भी करता है तो वो भी ठीक है। हर वक्त खाते रहना भी अच्छा नहीं होता। पेट को आराम मिलना चाहिए।

व्रत अपने लिए किया जाता है। पेट की शुद्धि के लिए। कोई आदमी यह कहे कि मैं भूखा रहकर परमात्मा को खुश कर रहा हूँ वो तरीका ठीक नहीं लगता। ज़्यादा खाओ, कम खाओ। इससे सामने वाले को क्या मतलब है? व्रत लेना कि मैं गलत काम नहीं करूँगा वो एक अच्छा तरीका माना जा सकता है। मैं सुबह उठूँगा, मैं व्यसन नहीं करूँगा, मैं परस्त्री से अपनी माँ या बहन की तरह व्यवहार करूँगा या टाईम पर काम करूँगा। आलस्य नहीं करूँगा। आज का काम कल पर नहीं छोड़ूँगा। अनेक रास्ते हैं जो अपनाए जा सकते हैं। कसम और बात होती है। कसम खाने वाली बात देखनी हो तो कोर्ट कचहरी चले जाओ। आपको पेशेवर झूठी कसमें खाने वाले मिल जाएँगे। जो लोग बात–बात पर कसम का सहारा लेते हैं वो अक्सर ठीक नहीं होते। सच्चे इन्सान को कसम खाने की क्या ज़रूरत है?

विचार करो अगर कहीं पर झूठ भी बोलना पड़े तो चुप रहना ज़्यादा अच्छा है। चुप रहने से पाप नहीं होता। कई महापुरुष सपने में भी झूठ नहीं बोलते थे। भगवान महावीर जी से किसी कसाई ने पूछा कि– गाय इधर से गई है? वो बैठे थे। गाय तो गई थी। वो उठ खड़े हो गए बोले– जबसे मैं खड़ा हूँ मैंने गाय को इधर से जाते नहीं देखा। कसाई वापस चला गया। जब वो खड़े हो गए तो उसके बाद तो गाय गई ही नहीं इसलिए उन्होंने युक्ति से काम लिया। संसार में ऐसे संकल्प भी होते हैं जिनसे इन्सान कुछ दुनिया को सबक दे देता है। व्रत का अर्थ है कुछ चीज़ों के लिए किया जा सकता है। जीवन में कुछ गलत हो तो व्रत उसके लिए कवच का काम करेगा। व्रत की महिमा को समझो। जीवन को कुन्दन बनाओ। खरे आए थे खरे बनकर ही संसार से विदा लो। जैसे खरा नोट सबको अच्छा लगता है। कटे–फटे दागी नोट की कीमत कम होती है।

वैदिक साधन आश्रम मंगलूवाला ग्राम खलिंगा रोड तपोभूमि, देहरादून

योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, वनस्पति चिकित्सा से सम्पूर्ण शरीर का

काया-कल्प शिविर

21 से 27 सितम्बर 2016

सात दिवसीय शिविर में भोजन, आवास व चिकित्सा की उचित व्यवस्था है।
शुल्क मात्र- रु० 3000/-
स्थान सीमित हैं इसलिए पंजीकरण तुरन्त कराएँ।

इस शिविर में पेट सम्बन्धी सभी रोगों, ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, चर्म रोग, गुर्दे व लीवर के रोग, मोटापा, दुबलापन, शुगर, अर्थराइटिस, कोलाइटिस, स्पोंडिलाइटिस, पुराना सिरदर्द, किसी भी प्रकार के माइग्रेन, मानसिक रोग, अनिद्रा, डिप्रेशन आदि अनेकों रोगों का सफल उपचार किया जायेगा।

निर्देश : अपने साथ दो तौलिये, टार्च, मच्छरदानी, एक गिलास, एक चम्मच, एक डायरी तथा पेन लेकर आयें

संचालक : योगाचार्य डॉ. विनोद कुमार शर्मा

सम्पर्क :
whats app-+91 7500191719, 9319317007, 9412051586
Facebook : nirogbharat, E.Mail : nirogbharat@gmail.com

वर की आवश्यकता

चौहान जाति की एम.एससी. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, एस.बी.आई बैंक, ऋषिकेश में मैनेजर पद पर कार्यरत, आयु 32 वर्ष, हाईट 5'–1'' के लिए योग्य वर चाहिए। पिता केन्द्रीय सेवा से सेवानिवृत क्लास–1 अधिकारी तथा राष्ट्रीय स्तर के आर्य विद्वान एवं लेखक। कृपया दहेज के इच्छुक तथा जन्मपत्री में विश्वास करने वाले व्यक्ति सम्पर्क न करें।

सम्पर्क सूत्र : 9412985121
ई–मेल : manmohanarya@gmail.com

वधु की आवश्यकता

हिमाचल प्रदेश निवासी 45 वर्षीय कुरुक्षेत्र गुरुकुल से दसवीं कक्षा तक शिक्षित युवक के लिए योग्य शिक्षित, गृह कार्य में कुशल आर्य कन्या की आवश्यकता है। हिमाचल में स्वयं के सेब के बगीचे हैं। इच्छुक व्यक्ति निम्न दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र : 08894662043
दिनेश कुमार, पुत्र स्व० श्री बिहारी लाल, ग्राम खड़ा पत्थर, पोदीम तहसील जुब्बल, जिला शिमला (हि.प्र.)

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(6 नवम्बर सायंकाल से 13 नवम्बर प्रातः 2016)

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 6 नवम्बर सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रातः 13 नवम्बर को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर **आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य** के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतू मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर मे विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 6 नवम्बर सायंकाल 6.00 बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 125 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक–जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी भी भाग ले सकते है।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें :–1. श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, मो.नं.–09310444170 समय दिन में 10.30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 10 बजे तक, 2. श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर, मो. 09416446305 समय प्रातः 10.00 से सांय 5.00 बजे तक, 3.श्री विजेश गर्ग जी देहरादून। 0135–2787001 समय 10.00 बजे से सायं 4.00 बजे।
6. अपनी वापिसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नहीं है।
7. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।
8. शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
9. आवश्यकता होने पर आचार्य आशीष जी (मो.नं.–09410506701) से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष–09710033799

ई. प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव–09412051586

संतोष रहेजा
उपाध्यक्षा–09910720157

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री राहुल जी, देहरादून	1100
2.	ओमप्रकाश कश्यप, देहरादून	500
3.	माता लीलावति जी, तपोवन, देहरादून	500
4.	श्री बलवीर सिंह मलिक	3100
5.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	10000
6.	श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर	1200
7.	प्राचार्य डी.बी.एस. कॉलेज, देहरादून	4200
8.	डा० विक्रमादित्य गौतम, उना (हिमाचल)	2300
9.	श्री सतवीर धनखड़, सोनीपत	1100
10.	श्री डी.आर. खट्टर, देहरादून	20000
11.	श्रीमती शशी वर्मा, फरीदाबाद	1100
12.	श्रीमती स्वराज घई, फरीदाबाद	1100
13.	श्री आई.जे. गिरधर, फरीदाबाद	1100
14.	श्रीमती नीलम गिरधर, फरीदाबाद	500
15.	श्री कुल भूषण श्रीधर, फरीदाबाद	6000
16.	श्री रामकंवर गुलिया	1000
17.	श्रीमती ज्योति वर्मा, मुम्बई	11200
18.	श्री ज्ञान भिक्षु, दिल्ली	500
19.	श्री देवेन्द्र कु० गांधी	1500
20.	श्री ज्ञान चन्द अरोड़ा, दिल्ली	500
21.	सु० श्री रेणु शाह, नालापानी	1000
22.	श्रीमती सुधा देवी त्यागी	1001
23.	श्री कृपाल सिंह मेहता	501
24.	श्री भुवन चन्द पाठक	501
25.	श्री प्रेम बल्लभ, डील, देहरादून	500
26.	श्रीमती सुधा रावत, श्रीमती कृष्णा रोथान सुधा रावत, शान्ति कपूर, देहरादून	11000
27.	श्री ध्यान सिंह, इन्द्रवाल	500
28.	श्री औंकार मल्होत्रा	500
29.	सीताराम जिन्दल फाउन्डेशन, दिल्ली	15000
30.	ऋषिवस्त्र व्यापार प्रा०लि०, नई दिल्ली	100000
31.	श्री अरुण दत्ता जी, देहरादून	1100
32.	माता सन्तोष रहेजा जी, नई दिल्ली	15000
33.	श्रीमती सीमा काठपालिया, नौएडा	2000
34.	श्री दीपक गोयल जी, देहरादून	10000
35.	श्री सत्य प्रकाश गोयल, देहरादून	2100
36.	श्री रवीन्द्र सोनी जी, यू.एस.ए.	10000
37.	श्रीमती प्रोमिला सोनी, यू.एस.ए.	10000
38.	माता ज्ञान देवी जी, दिल्ली	5000
39.	श्री गोपाल कृष्ण हाण्डा, दिल्ली	30000
40.	अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट, दिल्ली	11000
41.	श्रीमती प्रगति कुमार, दिल्ली	20000
42.	श्री राजकुमार आनन्द जी, दिल्ली	1000
43.	श्रीमती रीटा चुलून, यू.के.	4000
44.	श्रीमती सुधा अरोड़ा	500
45.	श्री नारायण रामू जी, यू.के.	500
46.	श्री महावीर सिंह जी, सोनीपत	500
47.	श्री ध्रुव जी, सोनीपत	500
48.	श्रीमती रुक्मणी टुटेजा, फरीदाबाद	500
49.	श्री राम रतन जायसवाल, देहरादून	1100
50.	श्री निशान्त गोयल, देहरादून	3100
51.	श्री देवेन्द्र बहुगुणा जी	1500
52.	श्री महेन्द्र सिंह, तपोवन, नालापानी	500
53.	श्रीमती सुषमा गुप्ता जी, दिल्ली	5000
54.	श्रीमती प्रतिभा मित्तल, दिल्ली	500
55.	श्रीमती धर्म देवी जी, दिल्ली	1000
56.	श्रीमती रमा बजाज, दिल्ली	500
57.	श्रीमती शीला देवी, दिल्ली	3100
58.	श्री राजकुमार भण्डारी जी, देहरादून	1000
59.	श्रीमती नेहा ग्रोवर, बैंग्लोर	50000
60.	श्री राकेश दुरखुरे, गुड़गांव	50000
61.	श्रीमती सन्तोष अग्रवाल, दिल्ली	35000
62.	श्री विजय गुप्ता जी, दिल्ली	100000
63.	श्रीमती सन्तोष अग्रवाल, दिल्ली	90000
64.	आर्य समाज, मछरोली	500
65.	श्री अरविन्द कुमार, देहरादून	501
66.	सु० श्री रेणु शाह, नालापानी	500
67.	श्रीमती नारु दुआ, दिल्ली	501
68.	श्री विद्यार्थी श्रीराम, कनाडा	10,000
69.	श्री कमल सिंह आर्य, नौएडा	11000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि
70.	स्वामी ब्रह्मानन्द जी, तपोवन	1100
71.	श्री ब्रह्मपाल जी, आईडीपीएल वीरभद्र	1100
72.	श्री गंगा शरण वर्मा जी, पिलखुवा	1111
73.	माताराज मिड्ढा, दिल्ली	1000
74.	श्री विजेन्द्र सिंह आर्य, सूरजपुर	2100
75.	श्री देवमुनि जी, ग्रेटर नौएडा	2100
76.	श्री अजय कुमार, पिलखुवा	2100
77.	श्री ललित कुमार, पिलखुवा	1100
78.	श्री जय भगवान शर्मा, पिलखुवा	1100
79.	श्री प्रेम बजाज, दिल्ली	1100
80.	श्री ओमप्रकाश हूजा, दिल्ली	1100
81.	श्रीमती स्वेदश धवन, तपोवन आश्रम	1100
82.	डा० एम.पी. नारंग, देहरादून	1000
83.	श्री धीरेन्द्र मोहन, देहरादून	1000
84.	श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुड़गाँव	6100
85.	भाटिया परिवार, दिल्ली	2100
86.	श्री सुकृत बजाज, दिल्ली	500
87.	श्रीमती नम्रता दत्ता, देहरादून	500
88.	श्री प्रेम बल्लभ, देहरादून	500
89.	श्री तिलक राज भारती, सहारनपुर	500
90.	श्री अतुल आर्य, गुड़गाँव	11000
91.	श्रीमती पूर्णिमा पंवार, देहरादून	501
92.	श्री समृद्धि कुमार, दिल्ली	500
93.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा, देहरादून	5000
94.	श्री वेद अमृत कुमार, गाजियाबाद	11000
95.	ए.एन.वी. इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड, लुधियाना	11000
96.	श्रीमती राजकुमारी सरदाना, नौएडा	500
97.	श्रीमती नेहा सरदाना, नौएडा	500
98.	श्रीमती मीनाक्षी गांधी, दिल्ली	500
99.	श्रीमती आशा वर्मा	51000
100.	मैसर्स अंकित इण्टरप्राईजेज, नई दिल्ली	5100
101.	श्रीमती रचना आहुजा, नई दिल्ली	5100
102.	माता सत्या देवी वाधवा, नई दिल्ली	2100
103.	श्री तुवंग देव, मेरठ	19500
104.	श्री राहुल मदान जी, नई दिल्ली	11000
105.	श्री महेन्द्र खारी, फतेहपुर	21000
106.	श्री प्रवेश वर्मा, फरीदाबाद	11000
107.	दीपिका, नौएडा	5100
108.	श्री नरेन्द्र सिंह, नई दिल्ली	5000
109.	रुचिरा, गुड़गांव	11000
110.	श्री अनुराग मित्तल, गुड़गांव	10000
111.	श्री प्रेम सिंह, दिल्ली	500
112.	पंडित महेन्द्र कुमार आर्य, नौएडा	1100
113.	श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, देहरादून	1100
114.	श्रीमती कमलेश आर्या, दिल्ली	2100
115.	महिला मण्डली, इन्द्रानगर, दे.दून	1100
116.	श्रीमती सुदेश खुराना, देहरादून	1100
117.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	5000
118.	श्री जी.पी. भल्ला, दिल्ली	3001
119.	आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड	3000
120.	श्री आनन्द मुनि जी	1000
121.	श्री राम रतन मलिक, पलवल	1200
122.	श्री कमल सिंह आर्य, ग्रेटर नौएडा	11000
123.	श्री ब्रह्मानन्द जी (स्वामी)	5100
124.	श्री सुशील श्रीवास्तव, लखनऊ	11000
125.	श्रीमती सरोज आर्या, हरिद्वार	11000
126.	श्री ओम प्रकाश हूजा, C/o स्वर्गीय श्री धनराज हूजा	1100
127.	श्री धनराज हूजा	1100
128.	श्री प्रेम बजाज	1100
129.	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, देहरादून	100000
130.	श्री ब्रह्मपाल जी, आई.डी.पी.एल. ऋषिकेश	1100
131.	श्री सुरेन्द्र आहुजा, दिल्ली	21000
132.	श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुड़गांव	51000
133.	श्री विजेन्द्र सिंह आर्य, सूरजपुर	2100
134.	श्री देव मुनि वानप्रस्थी, ग्रेटर नौएडा	2100
135.	श्री अजय कुमार सिंघल, पिलखवा	2100
136.	श्री ललित कुमार पिलखवा	1100
137.	श्री के.के. भाटिया, दिल्ली(भाटिया परिवार)	2100

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

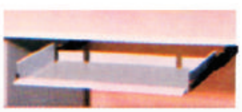

Slide out Keyboard tray

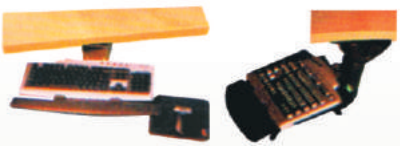

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

E-mail : delite@delitekom.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

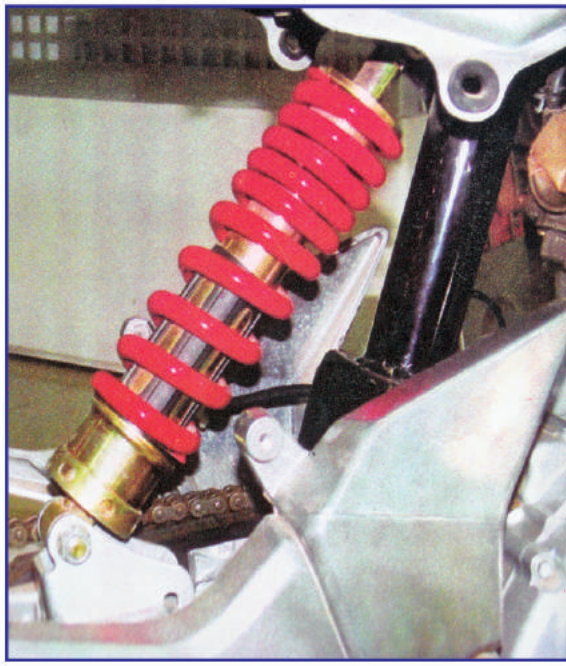

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100

प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com